ओ३म्

स्वामी दयानन्द सरस्वती

गुरुकुल दर्शन

वैदिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों का संवाहक

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का मुख पत्र

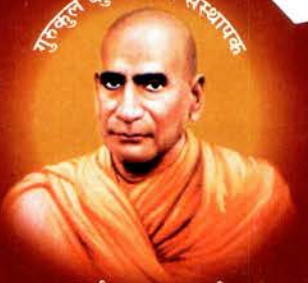

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

कार्तिक वि. स. २०७४ • कलियुगाब्द ५११८ • वर्ष : ०४ • अंक : १० • अक्तूबर २०१७

'प्रधानमंत्री के कहने पर गुरुकुल देखने पहुँचे गिरिराज सिंह'

स्वामित्व :

गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरियाणा)-136 119

(केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् नई दिल्ली से 10+2 तक सम्बद्ध)

दूरभाष: 01744-238048, 238648

E-mail : kurukshetragurukul@gmail.com Website : www.gurukulkurukshetra.com

AN ISO 2008 CERTIFIED INSTITUTE

॥ शुभ दिपावली ॥

गुरुकुल परिवार की ओर से सभी देशवासियों को दीवाली, भैयादूज व गोवर्धन पर्व की हार्दिक

शुभकामनाएँ

समाज सुधार की झलकियाँ

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के 'शून्य लागत प्राकृतिक कृषि' आदर्श पर पत्रकारों से वार्ता करते हुए महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी

केन्द्रीय गैस एवं पेट्रोलियम मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) अशोक प्रधान जी के साथ महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी व लेडी गर्वनर श्रीमती दर्शना देवी

हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में प्रतिभागियों को सम्मानित करते हुए महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी

शिमला के मशोबरा से 'स्वच्छता ही सेवा' अभियान का अधिकारियों के साथ प्रारम्भ करते हुए महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी

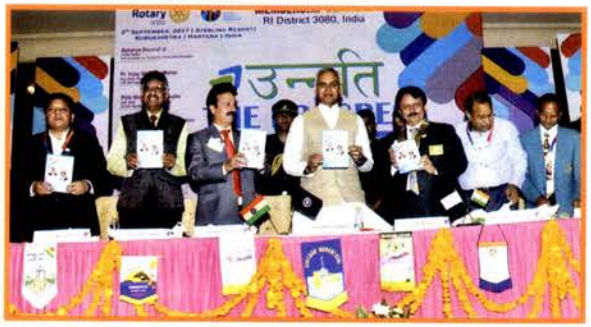

रोटरी क्लब, कुरुक्षेत्र के द्वारा आयोजित कार्यक्रम में एक पुस्तक का विमोचन करते हुए महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी

शिमला से पधारे कृषि वैज्ञानिकों के दल के साथ गुरुकुल के कृषि क्षेत्र का अवलोकन करते हुए राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी व प्रधान कुलवन्त सैनी जी

शिमला में एक कार्यक्रम मे दौरान स्थानीय लोगों के बीच आपसी सद्भाव का सन्देश देते हुए राज्यपाल देवव्रत जी व लेडी गर्वनर श्रीमती दर्शना देवी जी

जिला स्तरीय निशानेबाजी प्रतियोगिता के विजेता छात्रों के साथ आचार्य देवव्रत जी, प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता जी , सह-प्राचार्य शमशेर सिंह जी व प्रशिक्षक बलबीर सिंह जी

ओ३म्

गुरुकुल दर्शन

'सम्पादक परिवार'

संरक्षक : आचार्य देवव्रत (महामहिम राज्यपाल, हि. प्र.)
मुख्य संपादक : कुलवंत सिंह सैनी
मार्गदर्शक : विश्वबंधु आर्य
प्रबंध-संपादक : शमशेर सिंह
सह-संपादक : आचार्य सत्यप्रकाश
सूबेप्रताप आर्य
सुखविन्द्रपाल आर्य
नंदकिशोर आर्य
कानूनी सलाहकार : राजेन्द्र सिंह 'कलेर'
वित्तीय सलाहकार : सतपाल सिंह
पत्रिका व्यवस्थापक: राजीव कुमार आर्य
वितरण व्यवस्थापक: समरपाल आर्य
: अशोक कुमार

गुरुकुल भूमिदाता
सेठ ज्योति प्रसाद जी

आवश्यक सूचनाएं

1. **'गुरुकुल दर्शन'** मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण लेखकों के हैं, संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्याय-क्षेत्र कुरुक्षेत्र होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के अन्दर ही मानी जाएगी।
2. पत्रिका के विलम्ब अथवा अनियमित रूप से मिलने की स्थिति में चलभाष 8689002402 पर सूचना देवें। पत्रिका के सम्बन्ध में आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव की हमें अपेक्षा रहेगी।

– संपादक

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	पृ.सं.
1.	सम्पादकीय : दीवाली पर न फैलाएं प्रदूषण	02
2.	फायदे का सौदा है शून्य लागत प्राकृतिक कृषि : शमशेर	03
3.	गृहस्थ-आश्रम	04
4.	वैदिक पर्वों का महत्त्व एवं प्रासंगिकता	06
5.	चेतना को परिष्कृत करने का सशक्त माध्यम है स्वाध्याय	08
6.	Why Is Discipline Nesccessary	10
7.	उत्तम शिक्षा का अभाव ही पतन का कारण है	11
8.	भूलकर भी न पीएं फ्रिज का ठंडा पानी	12
9.	हम आस्तिक हैं या नास्तिक : एक चिन्तन	13
10.	वर्तमान परिवेश में गुरुकुलीय शिक्षा की समस्याएं	15
11.	हिन्दी की अंग्रेजी से सन्धि : व्यंग्य	16
12.	चढ़ अग्निपंख उड़ गये राष्ट्रऋषि कलाम	17
13.	गुरुकुल कुरुक्षेत्र की मधुर स्मृतियाँ	19
14.	वास्तविक जीवन की खोज	20
15.	वेद प्रचार विभाग की मासिक प्रगति रिपोर्ट	21
16.	गुरुकुल समाचार	22
17.	गुरुकुल समाचार	23
18.	गुरुकुल कुरुक्षेत्र : संक्षिप्त परिचय	24

प्रार्थना का अर्थ परमात्मा का मनन और अनुभव करना है।

संपादकीय

दीवाली पर न फैलाएं प्रदूषण

दीवाली खुशियों एवं प्रकाश का त्योहार है लेकिन दीवाली के दौरान छोड़े जाने वाले तेज आवाज के पटाखे पर्यावरण पर कहर बरपाने के अलावा जन स्वास्थ्य के लिये खतरे पैदा कर सकते हैं। दीवाली के दौरान पटाखों एवं आतिशबाजी के कारण दिल के दौरे, रक्त चाप, दमा, एलर्जी और निमोनिया जैसी स्वास्थ्य समस्याओं का खतरा बढ़ जाता है और इसलिये दमा एवं दिल के मरीजों को खास तौर पर सावधानियाँ बरतनी चाहिये।

दीवाली के उत्साह में कई बार बड़ी-बड़ी दुर्घटनाएं भी हो जाती है अर्थात आतिशबाजी के कारण आगजनी की घटना से न केवल आर्थिक नुकसान होता है बल्कि आग की चपेट में आने से कई बार लोगों की मौत भी हो जाती है। अत: हमें पूरी सावधानी ये यह पर्व मनाना चाहिए। इसके अतिरिक्त सबसे अहम बात यह है कि पुराने समय में दीवाली पर लोग अपने घरों में तेल के दीए जलाते थे, पूरा घर दीए की रोशनी से जगमगा उठता था। इससे न केवल घर की सुन्दरता बढ़ती थी बल्कि दीए बनाने वाले कुम्हार के घर भी अच्छी दीवाली मनाई जाती थी मगर पिछले कुछ वर्षों में इसमें काफी परिवर्तन हुआ है। दीए की जगह अब बिजली की लाइटों ने ले ली और अब तो उसमें भी बदलाव आ गया है। पहले देश में निर्मित लाइटें होती थी मगर अब चाइनीज लाइटों और अन्य सामान ने दीवाली के बाजार पर अपना कब्जा कर लिया है, जो एक चिन्ता का विषय है। यदि दीवाली पर हम कोई भी चाइनीज सामान खरीदते हैं तो इससे हम देश की अर्थव्यवस्था को खोखला कर रहे हैं। जहाँ तक सम्भव हो हमें स्वदेशी वस्तुओं का ही उपयोग करना चाहिए, विदेशी वस्तुओं से दूरी रखना ही उचित है।

पिछले कई वर्षों से यह देखा जा रहा है कि दीवाली के बाद अस्पताल आने वाले हृदय रोगों, दमा, नाक की एलर्जी और निमोनिया जैसी बीमारियों से ग्रस्त रोगियों की संख्या अमूमन दोगुनी हो जाती है। साथ ही जलने, आंख को गंभीर क्षति पहुंचने और कान का पर्दा फटने जैसी घटनायें भी बहुत होती हैं। डा. लाल ने आम लोगों को पटाखे नहीं छोड़ने अथवा धीमी आवाज वाले पटाखे छोड़ने की सलाह देते हुये कहा कि दिल और दमे के मरीजों को खास तौर पर पटाखों से पूरी तरह दूर रहना चाहिये। दीवाली के दौरान पटाखों के कारण वातावरण में आवाज का स्तर 15 डेसीबल बढ़ जाता है जिसके कारण श्रवण क्षमता प्रभावित होने, कान के पर्दे फटने, दिल के दौरे पड़ने, सिर दर्द, अनिद्रा और उच्च रक्तचाप जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। तेज आवाज करने वाले पटाखों को चलाने का सबसे अधिक असर बच्चों, गर्भवती महिलाओं और दिल तथा सांस के मरीजों पर पड़ता है। दीवाली के दौरान छोड़े जाने वाले पटाखों के कारण वातावरण में हानिकारक गैसों तथा निलंबित कणों का स्तर बहुत अधिक बढ़ जाने के कारण फेफड़े, गले तथा नाक संबंधी गंभीर समस्याएँ भी उत्पन्न होती हैं। उन्होंने बताया कि दिल तथा दमा के मरीजों के लिये दीवाली का समय न केवल पटाखों के कारण बल्कि अन्य कारणों से भी मुसीबत भरा होता है। दीवाली से पहले अधिकतर घरों में रंग-रोगन कराया जाता है, घरों की सफाई की जाती है। लेकिन पेंट की गंध, घरों की मरम्मत और सफाई से निकलने वाली धूल दमा के रोगियों के साथ-साथ सामान्य लोगों के लिये भी खतरनाक साबित हो सकती है। आन्तरिक प्रदूषण के अलावा बाहरी प्रदूषण और दीवाली के पटाखे से निकलने वाले धुएं, रसायन और गंध दमा के रोगियों के लिए घातक साबित होते हैं। इसलिए दीवाली के दिन और उसके बाद के कुछ दिनों में भी दमा के रोगियों को हर समय अपने पास इनहेलर रखना चाहिये और पटाखों से दूर रहना चाहिये। इन दिनों उनके लिये सांस लेने में थोड़ी सी परेशानी या दमे का हल्का आघात भी घातक साबित हो सकता है।

अध्ययनों में पाया गया है कि दमा का संबंध हृदय रोगों एवं दिल के दौरे से भी है इसलिये दमा बढ़ने पर हृदय रोगों का खतरा बढ़ सकता है। तेज आवाज वाले पटाखे सामान्य पटाखों से अधिक खतरनाक हैं क्योंकि इनसे कान के पर्दे फटने, रक्तचाप बढ़ने और दिल के दौरे पड़ने की घटनायें बढ़ जाती हैं। जानकारी के अनुसार मनुष्य के लिए 60 डेसीबल की आवाज सामान्य होती है। आवाज के 10 डेसीबल अधिक तीव्र होने के कारण आवाज की तीव्रता दो दोगुनी हो जाती है, जिसका बच्चों, गर्भवती महिलाओं, दिल तथा सांस के मरीजों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इतना ही नहीं दीवाली से अगले दिन घरों के बाहर सड़कों पर पटाखों, फुलझड़ियों आदि के अवशेष बिखरे पड़े होते हैं जिन्हें साफ करना भी हमारी जिम्मेवारी है। अपने आसपास हमें साफ-सफाई का हमेशा ध्यान रखना चाहिए। हम सभी का यह नैतिक कर्त्तव्य है कि त्योहार के नाम पर हम अपनी मनमानी न करें और त्योहार इस प्रकार मनाएं जिससे किसी को कोई दिक्कत या परेशानी न हों। **अन्त** में आप सभी को दीवाली, भैयादूज, गोवर्धन पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं। आपके जीवन में खुशियाँ ही खुशियाँ आएं।

- कुलवंत सिंह सैनी

फायदे का सौदा है शून्य लागत प्राकृतिक कृषि : शमशेर सिंह

शून्य लागत प्राकृतिक खेती पर गुरुकुल के सह-प्राचार्य शमशेर सिंह ने साक्षात्कार में अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा कि गुरुकुल पिछले कई दशकों से पूर्णत: शून्य लागत प्राकृतिक खेती कर रहा है। लगभग 180 एकड़ में स्थापित कृषि क्षेत्र पर विभिन्न फसलें फल और सब्जियां उगाई जाती हैं। गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा उगाई जा रही इन फसलों, सब्जियों और फलों में कभी भी कीटनाशकरूपी जहर नहीं डाला गया। गुरुकुल द्वारा उगाई जा रही फसलों और सब्जियों के लिए कई गुना अधिक मूल्य की पेशकश की जाती है लेकिन गुरुकुल के बच्चों के लिए ही कीटनाशक रहित अन्न और सब्जी का उपयोग किया जाता है ताकि गुरुकुल के बच्चों का स्वास्थ्य बना रहे। उन्होंने कहा कि किसान भाइयों के लिए शून्य लागत प्राकृतिक कृषि फायदे का सौदा है। यदि किसी के मन में प्राकृतिक कृषि को लेकर कोई शंका है तो वह गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्राकृतिक कृषि क्षेत्र पर आकर अपनी शंका को दूर कर सकता है।

शमशेर सिंह ने कहा कि आज के समय में व्यक्ति का शरीर बीमारियों का घर बन गया है। अस्पतालों में लगी लंबी लाइनें कोई संयोग तो नहीं है। घटती उमर और नित बढ़ती नई-नई बीमारियां खानपान से ही शुरु होती हैं और धीरे-धीरे यह स्वस्थ व्यक्ति के शरीर को बीमारियों का घर बना देती हैं। उन्होंने कहा कि स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन का निवास होता है और अगर हमें अपने जीवन को पूरी तरह खुशहाल बनाना है तो हमें स्वयं तो शून्य लागत प्राकृतिक खेती अपनानी ही होगी और साथ ही इसके लिए और लोगों को भी जागरुक करना होगा ताकि कीटनाशक और रासायनिक उर्वरकों से बंजर होती भूमि को बचाया जा सके।

शमशेर सिंह ने कहा कि महामहिम राज्यपाल हिमाचल प्रदेश आचार्य देवव्रत जी के मार्गदर्शन में गुरुकुल कुरुक्षेत्र पिछले कई दशकों से प्राकृतिक खेती कर रहा है और किसानों को जागरुक करने के लिए भी आचार्य देवव्रत जी लंबे समय से प्राकृतिक खेती जन जागरण अभियान में लगे हुए हैं। जिसका असर भी साफ-साफ देखने को मिल रहा है। अब हजारों किसान कीटनाशक और रासायनिक उर्वरकों से अपना मुंह मोड़ चुके हैं और उन्होंने शून्य लागत प्राकृतिक खेती को अपनाया है। प्राकृतिक खेती से इन किसानों के उत्पादन और मुनाफे में वृद्धि हुई है। जिससे वह खुशहाल जीवन जी रहे है। उन्होंने सभी से अपील करते हुए कहा कि वे भी स्वयं इस जन जागरण अभियान से जुड़े और अपने आसपास के लोगों को भी शून्य लागत प्राकृतिक खेती के लिए प्रेरित करें ताकि देश का किसान आगे बढ़े, क्योंकि जब देश का किसान आगे बढ़ेगा, तभी हमारा देश तेजी से उन्नति पथ पर अग्रसर होगा।

गुरुकुल के सह-प्राचार्य शमशेर सिंह ने कहा कि हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल एवं गुरुकुल के संरक्षक आचार्य देवव्रत जी का उद्देश्य है कि देश के किसान भाइयों की दशा सुधरे, कर्ज के बोझ तले दबकर किसान आत्महत्या न करें बल्कि जीरो बजट प्राकृतिक कृषि को अपनाकर न केवल अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारें बल्कि कीटनाशक और रासायनिक खादरहित खेती करके भूमि की उर्वरा शक्ति को भी बढ़ाएं।

उन्होंने बताया कि गुरुकुल के शून्य लागत प्राकृतिक कृषि मॉडल से प्रभावित होकर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने केन्द्रीय मंत्री गिरिराज सिंह को गुरुकुल कुरुक्षेत्र के कृषि क्षेत्र का दौरा करने भेजा, कृषि फार्म देखने के उपरान्त गिरिराज सिंह हैरान हुए और गुरुकुल के प्राकृतिक कृषि मॉडल की मुक्त कंठ से सराहना की। इसके अतिरिक्त समय-समय पर कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपति एवं कृषि वैज्ञानिक भी गुरुकुल के कृषि फार्म का अवलोकन कर प्राकृतिक कृषि मॉडल की प्रशंसा कर चुके हैं।

प्रस्तुति : प्रदीप दलाल

फोटो : 24 अगस्त 2017
किस्म : 1185 (दूसरा साल)

प्रभु से अच्छी प्रकार से की गई प्रार्थना कभी व्यर्थ नहीं जाती।

गृहस्थ धर्म

*ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास इन चारों आश्रमों का अपने-अपने स्थान पर विशेष महत्त्व है। इनमें से कोई भी उपेक्षणीय या ग्रहणीय नहीं है। इसमें ध्यान देने वाली बात यह है कि अर्थ और काम के सेवन का सम्बन्ध अन्य तीनों आश्रमों में न होकर केवल गृहस्थाश्रम के साथ हैं वय, तप, त्याग और अहर्निश परोपकार-परायण जीवन बिताने के कारण संन्यास का दर्जा बेशक सबसे ऊँचा है किन्तु ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास ये तीनों आश्रम जिस एक आश्रम की बदौलत चल पाते हैं, वह केवल गृहस्थ आश्रम है। **'गुरुकुल-दर्शन'** के पाठकों हेतु आचार्य रामदेव जी द्वारा लिखित **'गृहस्थ धर्म'** में वर्णित ज्ञान को पहुँचाने के लिए इस शृंखला को आरम्भ कर रहा है जिससे पाठक गृहस्थ धर्म से जुड़े अपने कर्त्तव्यों और जिम्मेदारियों के बारे में जान सकें।*

लेखक परिचय : आचार्य रामदेव जी का जन्म 31 जुलाई 1881 को ग्राम बजवाड़ा (महात्मा हंसराज जी का गांव), होशियारपुर में हुआ था। इन्होंने व्यक्तिगत रूप से स्नातक की शिक्षा प्राप्त की तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अंग्रेजी मुखपत्र 'आर्य पत्रिका' का सम्पादन किया। आचार्य जी हिन्दी और अंग्रेजी के प्रौढ़ लेखक, वक्ता और विद्वान् थे। उनकी टक्कर का व्याख्याता और विद्वान् विरला ही पैदा होता है। आपने जालंधर छावनी स्थित विक्टर हाईस्कूल में हैड मास्टर के पद को सुशोभित किया, साथ ही जींद में विद्यालय निरीक्षक के रूप में भी कार्य किया। महात्मा मुंशीराम जी के अनुरोध पर आप गुरुकुल कांगडी को जीवन दान करके गुरुकुल के हो गये और 1936 में आप स्वर्ग सिधारे। 'गृहस्थ-धर्म' में आपने गृह्यसूत्रों के आधार पर गृहस्थ धर्म का जैसा सांगोपांग विवेचन किया है, वह न केवल पठनीय है, बल्कि सही दिशा दिखाने वाला है। वैदिक धर्म ने गृहस्थ धर्म के पालन के लिए जैसा निर्देश दिया है, उसके अनुसार यदि समस्त मानव जाति आचरण करने लग जाए तो निस्सन्देह वह आज की अपेक्षा कहीं अधिक सुखी होगी।

गतांक से आगे.... पुनः सब आश्रमियों के सामान्य धर्म आपस्तम्ब सूत्र में इस प्रकार लिखे हुए हैं -

उसे (मनुष्य को) चाहिए कि उन रीतियों को अवलम्बन करे जिनसे आत्मज्ञान की प्राप्ति हो, जिनका परिणाम हो कि मनोविकार नष्ट हों और मनोनिग्रह होवे तथा मन आत्मचिन्तन में स्थिर हो जाए। आत्मज्ञान की प्राप्ति से बढ़कर कोई उद्देश्य नहीं है। हम उन छन्दों को उद्धृत करते हैं जो आत्मज्ञान प्राप्ति विषयक हैं। सर्व प्राणी उसी के निवास स्थान हैं जो प्रकृति के भीतर है। जो अमर और दोषरहित हैं, जो उसकी उपासना करते हैं वे भी अमर हो जाते हैं। जो स्वयं निष्कम्प है और सब चर वासस्थानों में रहता है। इस संसार में जो इन्द्रियों के विषय कहलाते हैं उनसे घृणा कर बुद्धिमान पुरुष को उचित है कि वह आत्मज्ञान की प्राप्ति के लिए यत्न करे।

हे शिष्य! मैंने जब कि अपने जीवात्मा में उस महान स्वप्रकाशरूप सर्वव्यापक, स्वतंत्र परमात्मा को नहीं पहचाना था जिसकी प्राप्ति बिना किसी मध्यस्थ के ही करनी चाहिए तब मैं उसे (उस परमात्मा को) अन्य विषयों में ढूंढता था परन्तु अब जबकि मुझे ज्ञान हो गया वैसा नहीं करता, अतः तू भी उस उत्तम मार्ग पर चल जो कि कल्याण (मोक्ष) की ओर ले जाता है। उस मार्ग पर न चल जो दुःख (बार-बार के जन्म मरण रूप) की ओर ले जाता है।

यह (परमात्मा) वही है जो सब प्राणियों में अनादि है, जिसका गुण ज्ञान है, जो अमर है, अपरिवर्तनशील है, शरीर व शारीरिक अवयवों से रहित है, वाणी व जिह्वा से रहित है, सूक्ष्म शरीर से भी रहित है, स्पर्श इन्द्रिय से भी रहित है, जो अति पवित्र है। वही विश्व व्यापक है, वही सर्वोत्तम प्राप्तव्य वस्तु है, वह शरीर के बीच में रहता है जैसे कि सत्र यज्ञ में विषुवत् दिन मध्यवर्ती है, वह सबके लिए प्राप्तव्य है जैसे कि अनेक मार्गों वाला नगर। जो उसका ध्यान करता है और जो सब स्थानों में सर्वदा उसकी आज्ञानुसार आचरण करता है और जो पूर्ण भक्ति के द्वारा उसे (उस परमात्मा को) देखता है (जो कि बड़ी कठिनता से दीखता है, अतः सूक्ष्म है) वह स्वर्ग सुख को प्राप्त होता है। वह ब्राह्मण जो बुद्धिमान है और जो सब प्राणियों को (सर्वव्यापक) आत्मा में देखता है तथा जो उस सर्वव्यापक आत्मा का ध्यान करता हुआ अशान्त नहीं होता (अर्थात एकाग्र हो जाता है) और जो प्रत्येक वस्तु में उस आत्मा को देखता है (वह ब्राह्मण) स्वर्ग में प्रकाशित होता है।

जो स्वयं ज्ञान स्वरूप है और जो कमल तन्तु से भी अधिक सूक्ष्म है, सारे ब्रह्माण्ड में व्यापक हो रहा है। जो अपरिवर्तनशील है और पृथ्वी से बड़ा है, सारे ब्रह्माण्ड को अपने भीतर रखता है, इन्द्रियों और उनके विषयों का जो सांसारिक ज्ञान है, उससे वह भिन्न है, उसका ज्ञान सर्वोपरि है।

उसी से जो स्वयं विभाजन करता है। सब शरीर उत्पन्न होते हैं। वही सबका आदि कारण है वह अनादि है, वह अपरिवर्तनशील है परन्तु सब दोषों का क्षय इस जीवन में योग (साधन) से होता है।

वह ज्ञानी पुरुष जिसने अपने दोषों का क्षय कर दिया है (जो दोष की प्राणियों की हानि करते हैं) मुक्ति को प्राप्त करता है। अब हम उन दोषों को गिनाते हैं जिनसे प्राणियों का क्षय होता है। ये दोष हैं-**'क्रोध, हर्ष में फूल जाना, असन्तुष्टता, लोभ, घबराहट, हानि पहुंचाना, छल (असत्य मानना, बोलना व करना), अधिक भोजन से पेट को फुला लेना, निन्दा, द्रोह, तृष्णा, अन्तर्द्वेष, इन्द्रियों को दमन रखने में भूल, मन को एकाग्र करने की तत्परता में भूल आदि'** इन दोषों का निवारण योग से होता है।

क्रोध और विशेष राग से रहित होना, असन्तुष्टता, लोभ, घबराहट (असमाधानता) छल और हिंसा से पृथक् रहना, सत्यता, मिताहार, निन्दावरोध, अद्वेष, निष्काम उदारता, प्रतिग्रह से पृथकता, धीरता, सरलता, अनुचित उत्तेजना का नाश, इंद्रिय दमन, सब जीवों के साथ निर्वैरभाव, चित्त की एकाग्रता (सर्वव्यापक आत्मा के ध्यान में) आर्योचित सदाचार, शान्ति और सन्तोष, ये सब हैं जो कि सर्वसम्मति से सब आश्रमों के लिए (उचित) ठहराए गये हैं। वह पुरुष जो कि धर्मशास्त्र के नियमानुसार इन सब का आचरण करता है, सर्वव्यापक ब्रह्म में प्रवेश करता है।

(आपस्तम्ब, प्रश्न 1, पटल 8, खंड 22 व 23 के सूत्र)

।। वर्णाश्रम धर्म ।।

वर्णाश्रम धर्म जो सब पूर्व लेख अंकित किये जा चुके हैं उनसे परिणाम यह निकलता है कि प्राचीनकाल में प्रत्येक गृहस्थ की सन्तान को ब्रह्मचारी या ब्रह्मचारिणी बनना पड़ता था। जो मन्दबुद्धि पढ़ नहीं सकते थे वे शूद्रों की कोटि में डाले जाते थे और जो पढ़-लिखकर भी पीछे से कुसंगति के कारण कुसंस्कृत हो जाते थे वे भी शूद्र व उनसे भी नीचे ठहराए जाते थे। गृहस्थाश्रम चार भागों में विभक्त था जिनके नाम ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र थे। ब्राह्मण जाति के अभ्युदय अर्थात् उनके मानसिक, आत्मिक, शारीरिक तथा सामाजिक उन्नतियों के उपायों को आविष्कृत कर उन्हें प्रवृत्त कराने की चेष्टा करते थे और क्षत्रिय उक्त आविष्कृत नियमों के अनुसार सब वर्णों की उन्नति के लिए उनकी रक्षा करते थे। वैश्य स्वदेश तथा विदेशों के वाणिज्य से जाति के वैभव की वृद्धि करते थे और शूद्र विशेष मानसिक कार्यों के सम्पादन न कर सकने के कारण अपने शरीर से ही उक्त तीनों वर्णों की सेवा किया करते थे।

इन चारों वर्णों के लोग अपनी-अपनी योग्यता के कारण उच्च और निम्न समझे तो जाते थे परन्तु अपने-अपने कर्त्तव्यपालन करने के कारण सभी कल्याण के अधिकारी माने जाते थे। ब्रह्मचर्य आश्रम की समाप्ति पर जो गृहस्थाश्रम में प्रवेश करना चाहता था वह अपने गुणकर्मानुसार किसी एक वर्ण के कार्यों के सम्पादन की प्रतिज्ञा करता था एवं वह उसी वर्ण का माना जाता था। सब वर्ण के लोग सब वर्ण के हाथ का भोजन खाते थे। समवर्ण का विवाह अच्छा समझा जाता था परन्तु उच्च वर्ण का पुरुष कभी-कभी अपने से नीचे वर्ण की कन्या से भी विवाह कर सकता था। इस प्रकार चारों वर्ण एक-दूसरों के साथ बंधे हुए सुख से जीवन व्यतीत करते थे।

गृहस्थाश्रम को समाप्त कर लोग विशेष तपश्चरण करने के लिए वानप्रस्थ बनते थे और फिर संन्यासी परन्तु यह कोई निश्चित नियम नहीं था। जो कोई विशेष साधन सम्पन्न पुरुष परोपकार की अति तीव्र कामना रखते थे वे ब्रह्मचर्य आश्रम से भी संन्यास ग्रहण कर लेते थे। तात्पर्य यह है कि जैसा उपनिषद् में लिखा है -

सर्वे वेदा यत् पदमामनन्ति तपांऽसि सर्वाणि च यद् वदन्ति।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीम्योम्।।

अर्थात् ब्रह्मचारी, तपस्वी (विशेष धर्मानुष्ठानी गृहस्थ, वानप्रस्थ व संन्यासी) सभी आश्रमियों का मुख्य उद्देश्य यह था कि संसार इस प्रकार चलाया जाए जिसमें मनुष्य जीवन का सर्वोत्तम उद्देश्य अर्थात परमात्मा की प्राप्ति सिद्ध होती रहे।

इस उद्देश्य की पूर्ति में जो-जो बाधाएं उपस्थित होती थीं उन्हें दूर करेन का सर्वोपरि यत्न संन्यासी करता था। वह एक जाति की प्रजाओं के ही परस्पर द्वेष (यदि किसी कारण उत्पन्न हो गए हों) को उन्मूलन करने का यत्न नहीं करता था प्रत्युत वह परिव्राजक नाम को सफल करने के लिए संसार की भिन्न-भिन्न मनुष्य जातियों में भी भ्रमण कर उनके बीच प्रीति संस्थापन का यत्न करता था ताकि लोग युद्धादि से पृथक् हो शान्तिपूर्वक परमात्मा की प्राप्ति के साधनों में लगे रहें।

इसी मंगल कामना के कारण परिव्राट् संन्यासी एक जाति नहीं प्रत्युत सभी मनुष्य जातियों का पूज्य जाना जाता था, लोग उसे जगद्गुरु की उपाधि से भी विभूषित करते थे और बड़े-बड़े नरेश उस परिव्राट् के सम्मुख शीश नवाते थे। दु:ख की बात है कि वर्णाश्रम धर्म के अप्रचार के कारण आज भारत ही नहीं प्रत्युत पृथ्वी के सभी देश मनुष्य जीवन के सर्वोत्तम उद्देश्य की ओर अपनी पूरी दृष्टि नहीं देते। परमात्मा कृपा करे कि उस प्राचीन वर्णाश्रम धर्म का पुन: प्रचार हो ताकि भारत और अन्य देश भी पूर्ण सुखी हो जाएं। **...क्रमश:**

वैदिक पर्वों का महत्त्व एवं प्रासंगिकता

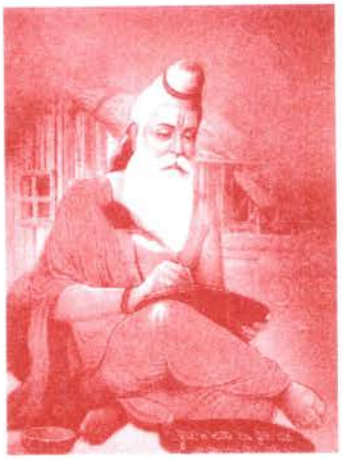

अक्तूबर, 2017 मास में पांच वैदिक पर्व हैं जिनमें वाल्मीकि जयन्ती, ऋषि दयानन्द बलिदान दिवस, दीपावली, गोवर्धन पूजा और भाई दूज के पर्व हैं।

इन पर्वों की महत्ता व प्रासंगिकता पर एक दृष्टि डालते हैं।

वाल्मीकि जयन्ती पर्व

आश्विन मास की पूर्णिमा तदनुसार 5 अक्तूबर, 2017 को वाल्मीकि जयन्ती अर्थात् ऋषि वाल्मीकि जी के जन्म दिवस का पर्व है। ऋषि वाल्मीकि जी मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन चरित पर महाकाव्य रचने वाले सृष्टि के शायद आदि कवि हैं। उनसे पूर्व ऋषियों व विद्वानों के उनके समान किसी महापुरुष के जीवन पर महाकाव्य उपलब्ध नहीं होते। यह सुनिश्चित व निर्विवाद है कि वाल्मीकि जी संस्कृत के उत्कृष्ट विद्वान् व अनुपम कवि थे। उन्होंने ईश्वर प्रदत्त व कुछ स्वोपार्जित प्रतिभा से रामायण की रचना करके विश्व में एक अनुकरणीय एवं प्रेरणादायक कार्य किया है और यह एक कीर्तिमान है। हमें लगता है कि ऋषि कोटि के महामानव होने के कारण ही वह इस कार्य को सम्पन्न कर पाये। विचार करने पर कई प्रश्न अनुत्तरित रहते हैं। मुख्य प्रश्न यह है कि उन्होंने वनों में अपने किसी आश्रम में बैठकर रामायण की वह सामग्री जिसे उन्होंने प्रस्तुत किया है, उसे कैसे जुटाया होगा? बहुत विचार करने पर हमें लगता है कि यह उनके ऋषित्व व यौगिक क्षमताओं के कारण सम्भव हुआ। उन्होंने अपनी दिव्य दृष्टि से रामायण के सभी पात्रों के कार्यों, चेष्टाओं व घटनाओं का यथावत् साक्षात्कर किया होगा। वह इसके पात्र वा सर्वथा योग्य भी थे, इसमें ईश्वर की भी बहुत बड़ी सहायता उन्हें मिली तभी यह कार्य सम्भव हो सका। यह दु:ख का विषय है कि हिन्दू व आर्यों के सभी बन्धु परस्पर मिलकर इस पर्व को नहीं मनाते। ऋषि वाल्मीकि किसी एक वर्ग व जाति के ऋषि व महापुरुष नहीं थे। वह सब आर्यों व हिन्दुओं के महापुरुष हैं। सबको मिलकर उनकी जयन्ती मनानी चाहिये। हमें यह भी लगता है कि जन्मना ब्राह्मणों, पण्डे-पुजारियों व सभी धार्मिक जनों को अपनी संकीर्णताओं का त्यागकर इस दिवस को अन्य पर्वों की तरह आनन्दपूर्वक दलित आदि सभी भाईयों के साथ मिलकर मनाना चाहिये, तभी हमारा समाज समरस होकर बलवान् होगा। इसका तरीका यह हो सकता है कि उस दिन बृहद् यज्ञ किये जायें, उनके विस्तृत जीवन के सभी पहलुओं पर दृष्टि डाली जाये और स्वयं को उनके समान विद्वान्, ज्ञानी, आदर्श महापुरुषों का भक्त व गुणकीर्तन करने वाला, वेदों में गहन आस्था रखनेवाला, संस्कृत व संस्कृति के प्रति प्रेम की भावना, देश भक्ति व देश को सर्वोपरि मानने की भावना हमारी होनी चाहिये। देश के धर्म व संस्कृति के विरोधी दलों तथा विदेशी देश विरोधी शक्तियों के प्रभाव में किसी स्थिति में नहीं आना चाहिये। लोभ व एषणाओं से मुक्त होना चाहिये। ऐसा करके ही हम वाल्मीकि जयन्ती को मनायें तो हमें यह दिवस सार्थक लगेगा। हमें यह भी ध्यान रखना है कि ऋषि दयानन्द के अनुसार सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें। इसका पालन ही आर्य हिन्दू समाज को सशक्त बना सकता है।

ऋषि दयानन्द बलिदान पर्व (19 अक्तूबर, 2017)

ऋषि दयानन्द महाभारत के बाद वेदों के सबसे बड़े विद्वान व भाष्यकार हुए तथा देश की आजादी सहित समाज सुधार के क्षेत्र में उनका सर्वाधिक योगदान है। ऋषि दयानन्द के द्वारा ही हमें वेदों में विद्यमान ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति का सत्य स्वरूप विदित हुआ व उनसे ही हमें ईश्वर का ध्यान करने की सन्ध्योपासना विधि सहित यज्ञोपासना पद्धति प्राप्त हुई है एवं साथ ही जीवन में इनका महत्त्व हम सब ने जाना है। वैदिक यज्ञ अग्निहोत्र सहित आर्यों व हिन्दुओं के पंच-महायज्ञों का उद्धार भी उन्होंने किया। उनके आने से पूर्व ईसाई व मुसलमान वैदिक धर्म व संस्कृति पर आक्रमण करते थे, लोगों का तलवार आदि के द्वारा बल प्रयोग एवं लोभ से धर्मान्तरण किया जाता था। हिन्दुओं की संख्या घट रही थी, मुसलमानों व ईसाइयों की जनसंख्या बढ़ रही थी एवं जन्मना जातिवाद हिन्दुओं को परस्पर संगठित करने के स्थान पर उन्हें एक-दूसरे से दूर व आपस में शत्रु बनाये हुए था। नारी और दलित भाइयों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं था। ऐसी दयनीय स्थिति आ गई थी कि अन्य तो क्या ब्राह्मण, जिनका वेदाध्ययन ही मुख्य कार्य था, वेदों से दूर जा चुके थे। वेद विलुप्त हो

चुके थे, उन्हें प्राप्त करना भी कठिन था तथा वेदों का सत्य अर्थों से युक्त भाष्य व टीका कहीं उपलब्ध नहीं थी, ऐसे समय देव दयानन्द जी ने अपनी अपूर्व प्रतिभा और ईश्वर की सहायता से इन सभी क्षेत्रों में महान् व अपूर्व योगदान किया जिसका परिणाम है कि देश आजाद हुआ और आज आर्य-हिन्दू मत स्वाभिमान से समाज में जीवन व्यतीत कर रहे हैं। स्वामी दयानन्द ने अपने ज्ञान वा विद्या से यह भी सिद्ध किया कि वेद और वैदिक साहित्य ही ज्ञान के मूल स्रोत हैं और धर्म की जिज्ञासा व ज्ञान प्राप्ति में परम प्रमाण वेद ही हैं। अन्य सभी मतों की समीक्षा करते हुए भी स्वामी जी ने केवल वेद को ही पूर्ण सत्य सिद्ध किया है। ऋषि दयानन्द ने हमें वेद, वेदभाष्य सहित वेदानुकूल वा वेदों के रहस्यों से परिचित कराने वाले ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, पंचमहायज्ञविधि, गोकरुणानिधि, व्यवहारभानु आदि अनेक ग्रन्थ दिये। सभी धार्मिक संस्थाओं के आचार्यों से उन्होंने शास्त्रार्थ कर वेदों की सार्वभौमिकता व सत्यता को सिद्ध किया। वह 'भूतो न भविष्यति' के समान महापुरुष व ऋषि थे। कार्तिक मास की अमावस्या के दिन मनाई जाने वाले प्राचीन आर्य पर्व दीपावली के दिन संन्ध्या समय में उनका बलिदान हुआ था। यह दिवस भी ऋषि दयानन्द जी के जीवन चरित पर एक दृष्टि डालते हुए उनके अनुरूप कार्य करने व वेदों को आत्मसात् उसे धारण कर उसके अनुरूप आचरण का संकल्प लेकर मनाना चाहिये। यदि ऐसा नहीं करते तो इस दिन को मनाने का कोई उपयोग नहीं है।

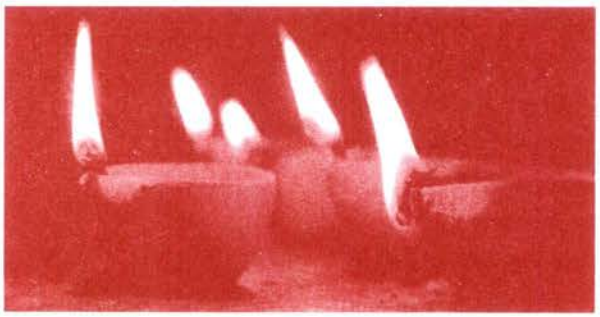

आर्य पर्व दीपावली (19 अक्तूबर, 2017)

दीपावली एक प्राचीन आर्य पर्व है। हमारी प्राचीन संस्कृति व सभ्यता कृषि व ग्राम प्रधान रही है। हमारा शरीर अन्नमय होने से अन्न व कृषि का मनुष्य के जीवन में सर्वाधिक महत्व है। अन्य चीजों का महत्व अन्न के बाद ही आता है। कार्तिक मास की अमावस्या से पूर्व धान व चावल की फसल पक कर तैयार हो जाती है जिसका उपयोग व उपभोग हम वर्ष भर करते हैं। किसान व वैश्य-व्यापारियों का इससे प्रसन्न होना स्वाभाविक होता है। इस अन्न के तैयार होने में अनेक प्राकृतिक शक्तियों का योगदान होता है। उन प्राकृतिक शक्तियों को हम देवता व दैवीय शक्ति मानते हैं। ईश्वर व जीवात्मा के अतिरिक्त अन्य सभी प्राकृतिक शक्तियाँ जड़ व भावना शून्य होती हैं तथापि उनके योगदान के लिए उनका धन्यवाद करना तो बनता ही है। धन्यवाद एक प्रकार से मनुष्य को विनम्र एवं अहंकार शून्य बनाता है। अत: इस दिन सभी प्राकृतिक दैवीय शक्तियों व देवी-देवताओं को नवान्न से यज्ञ में आहुतियां देने का विधान हमारे पूर्वजों ने किया है। इसी कारण प्राचीन काल से प्रचलित इस दिन धान की खील बनाकर व बाजार से खरीदकर उसका भक्षण करने व अपने मित्रों व पड़ोसियों में वितरित करने का विधान है। इन सब कार्यों से पर्यावरण को लाभ होने सहित समाज में समरसता का संचार होता है। वृहद व पारिवारिक यज्ञों के द्वारा सामूहिक ईश्वर भक्ति व उपासना का अवसर मिलता है। अत: इस दिन को एक पर्व के रूप में मनाना सार्थक होता है। यह पर्व दो महीनों श्रावण व भाद्रपद की तीव्र वर्षा के बाद व शरद व हेमन्त ऋतु से पूर्व आता है। वर्षा के कारण आवासीय भवनों में अनेक प्रकार के दोष उत्पन्न होते हैं जिनका निवारण कर उन्हें स्वच्छ व सुन्दर बनाया जाता है। इससे रोगकारक —कृमियों का नाश भी होता है। यह पर्व हमें भावी हेमन्त ऋतु से सावधान भी करता है और हम शरद, हेमन्त व शिशिर ऋतुओं के प्रभाव से अपनी रक्षा के उपाय गरम वस्त्र आदि व ऋतु के अनुसार भोजन की व्यवस्था समय पर व उससे पूर्व कर लेते हैं। ऐसे समय में कार्तिक अमावस्या को यज्ञ करने का विशेष प्रभाव हमारे पर्यावरण पर भी पड़ता है जिससे रोगकारक कृमियों के नाश सहित वायु व जल की शुद्धि भी होती है और प्राकृतिक दैवीय शक्तियों का सन्तुलन बनता व बना रहता है। प्राकृतिक व भौतिक विपदाओं पर भी इसका प्रभाव पड़ता है और हम विपदाओं से बचे रहते हैं। ऐसे सब कारणों से दीपावली पर्व मनाया जाता है। इस दिन हमें नवान्न धान व खील से विधि विधान से यज्ञ करना चाहिये। घरों की स्वच्छता के साथ अमावस्या के अन्धकार को प्रकाश के दीपक व बल्ब जलाकर घरों को शोभायमान करना चाहिये। मित्रों को शुभकामनायें देनी चाहिये। मिष्ठान्न व स्वादिष्ट भोजन बनाना चाहिये व उनका इष्ट मित्र व पड़ोसियों में वितरण करना चाहिये। ऐसा करके समाज में समरस होकर रहने की भावना को विकसित व उन्नत करना ही इस पर्व का महत्व प्रतीत होता है। बहुत से लोग मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी के वनवास से अयोध्या लौटने की घटना को भी इस दीपावली पर्व से जोड़ते हैं। ऐतिहासिक प्रमाणों से यह बात तो सिद्ध नहीं होती परन्तु इस घटना को अलग से पर्व रूप में न मनाये जाने के कारण यदि इसे स्मरण कर लेते हैं तो यह एक अच्छी बात ही कही जा सकती है। इसे पूरे उत्साह से परस्पर मिलकर मनाना चाहिये। इस दिन से महावीर स्वामी और स्वामी रामतीर्थ आदि के निर्माण पर्व भी जुड़े हैं। इन्होंने अपने समय में अपनी अपनी बुद्धि व विचारधारा के अनुसार कार्य किया। समाज में उन्हें काफी महत्व मिला। आज भी देश में इनके बड़ी संख्या में अनुयायी हैं। अत: इनके जीवन की कुछ अच्छी बातों को भी जानकर उन्हें अपनाया जा सकता है।

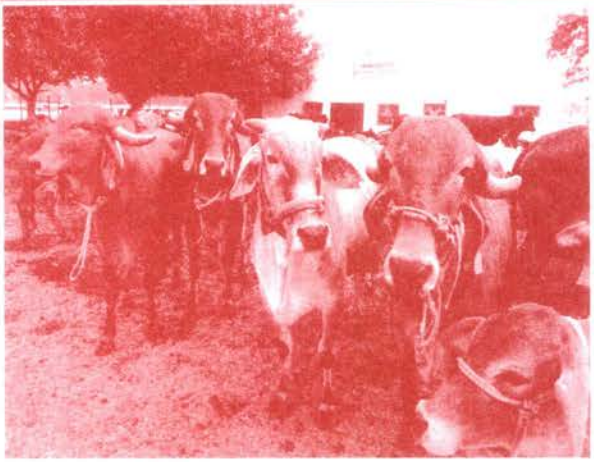

गोवर्धन पूजा (20 अक्तूबर 2017)

भारत सृष्टि के आरम्भ से ही कृषि प्रधान देश है। यहां मनुष्य भोजन, अन्न व ऐसे अनेक पदार्थों के लिए गाय व उससे प्राप्त बैलों के द्वारा कृषि कार्य पर निर्भर रहते आये हैं। अत: गो व इसके वंश व कुलों के संवर्धन का विशेष महत्त्व है। गाय विश्व की माँ है, विश्व की नाभि है और मनुष्य को सभी सुखों सहित धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष प्राप्त कराने में सहायक है। गोदुग्ध से हमारा शरीर बलिष्ठ होता है, रोग रहित होकर दीर्घायु होता है। गोदुग्ध से यज्ञ कर ही हम पुण्य कर्मों का संचय करने में समर्थ होते हैं। अत: गो का महत्त्व निर्विवाद है। गो पूजा का अर्थ पौराणिक पूजा नहीं अपितु यह एक वैज्ञानिक कार्य है। हमें अपनी व देश की गोवों की रक्षा व उन्हें नीरोग रखने सहित उनके गुणकारी दुग्ध में वृद्धि करने के लिए योजनायें बनाकर उन्हें कार्यरूप देना चाहिये। गाय की नस्लों को सुधारने के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान करने चाहियें। सरकार के द्वारा व सहयोग से गोचर भूमि का विकास करना होगा। वृद्ध व दुग्ध न देने वाली गायों की रक्षा के लिए योजनायें बनानी होंगी। उनके दुग्ध, मूत्र, गोबर, मरणोपरान्त प्राप्तव्य चर्म आदि पदार्थों का रोग निवारण व भोजन की दृष्टि से गुण एवं मात्रा में वृद्धि करनी होगी। चर्म का उपयोग चप्पल व जूतों में होता ही है। गाय से इतने लाभ हैं कि हमें उनके प्रतिकार में उससे प्रेम व श्रद्धा रखनी चाहिए। यह ध्यान देना होगा कि गाय को किसी भी प्रकार का कोई कष्ट न हो। गोद्रोही को राष्ट्रद्रोह का अपराधी मानना चाहिये। इसके लिए कानून बनवाने के साथ ऐसे लोगों को कानून के शिंकजे में डलवाना होगा। अपने कर्तव्य का पालन न करने और रिश्वत आदि लेकर गोद्रोहियों पर कार्यवाही न करने वाले अधिकारियों को भी चिह्नित कर कठोर कानून बनवा कर दण्डित कराना होगा। गोरक्षा एवं गोसंवर्धन के ऐसे अनेक उपाय करके ही हम गोवर्धन पूजा को यथार्थ रूप में मना सकते हैं। केवल खाना-पूर्ति और पौराणिक रीति से गोवर्धन पूजा करके पर्व मनाने का हमें कोई महत्त्व प्रतीत नहीं होता।

भाई दूज का पर्व (21 अक्तूबर 2017)

यह पर्व भी अब पुराना हो चुका है। इसे दीपावली के दूसरे दिन, इस वर्ष 21 अक्तूबर, 2017 को, मनाया जायेगा। रक्षा बन्धन और भाई दूज कुछ-कुछ समानार्थक पर्व हैं। अतीत में इन पर्वों की महत्ता के कारण इन्हें वर्ष में दो बार मनाया जाता था। इसके आरम्भ का इतिहास अब किसी को ज्ञात नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि भारत में मुस्लिम आक्रमण व देश के कुछ भागों पर उनके अधिकार होने पर हिन्दू स्त्रियों मुख्यत: कम आयु व युवा कन्याओं का जीना दूभर हो गया था। उनको कुकर्म के लिए उठा लिया जाता था। धर्मान्तरण तो किया ही जाता था। ऐसे में उनकी रक्षा का प्रश्न समाज में उत्पन्न हुआ। ईश्वर की सृष्टि में यह परम्परा है कि जब कोई अन्याय करता है तो उससे रक्षा के लिए परमात्मा धार्मिक व पवित्र श्रीकृष्ण सदृश जीवात्माओं को जन्म देकर उनमें उनकी रक्षा का भाव उत्पन्न करते हैं। कुछ ऐसे विपरीत समय में बचपन से ही कन्याओं ने अपने भाइयों व ऐसे वीरों को अपना भाई मानकर उनका तिलक करके उनसे उनकी रक्षा का वचन लिया होगा। उसी का प्रतीक यह पर्व लगता है। आज समय बदल जाने पर इसकी उतनी महत्ता नहीं है परन्तु इतिहास में जो परम्परा

आरम्भ हो जाती है उसे उसका उद्देश्य न रहने पर भी समाप्त करना कठिन होता है। इस पर्व को मनाने में कोई वैदिक मत विषयक सैद्धान्तिक समस्या नहीं है। अत: इस दिन को परम्परागत रूप से मनाया जाने में किसी को आपत्ति नहीं हो सकती। हाँ, इतना अवश्य करना चाहिये कि इस दिन भाईदूज के पर्व को करने से पूर्व वैदिक अग्निहोत्र अवश्य करना चाहिये। बिना यज्ञ के कोई भी अनुष्ठान महत्त्वहीन होता है। यज्ञ कर लेने से उसका महत्त्व अधिक होता है और लाभ भी अधिक होते हैं।

हमने इस लेख में पाँच वैदिक पर्वों की प्रासंगिकता पर अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। हम आशा करते हैं कि पाठक इन विचारों पर और अधिक विचार कर अपने सुझाव हमें उपलब्ध करायेंगे जिससे हम उनसे लाभ उठा सकें। **- मनमोहन कुमार आर्य**

196, चुक्खूवाला-2, देहरादून 20081, मो-9412985121

प्रार्थना का अर्थ है - मुझमें सुप्त वाले ईश्वरीय तत्त्व को जाग्रत करने का मेरा प्रयत्न।

चेतना को परिष्कृत करने का सशक्त माध्यम है स्वाध्याय

परिस्थिति से मन:स्थिति के प्रभावित होने की मान्यता का नाम भौतिकवाद है। इसके उलट मन:स्थिति के अनुरूप परिस्थितियों के ढालने-बदलने की मान्यता अध्यात्मवाद कही जाती है। दोनों ही महत्त्वपूर्ण हैं। दोनों ही आवश्यक है। इनमें से उपेक्षणीय एक भी नहीं है, फिर भी जिसकी प्रधानता समझी जाएगी, पुरुषार्थी उसी में नियोजित होगा। दोनों में से जिसे भी महत्त्व दिया जाएगा, प्रयास-पुरुषार्थ की समस्त ऊर्जा उसी दिशा में बहने लगेगी। आज भौतिकवादी जीवन दर्शन ने मानवीय सत्ता को पूरी तरह से अपने शिकंजे में कस रखा है इसीलिए मानसिक स्तर को ऊँचा उठाने की आवश्यकता नहीं समझी जाती है। मानसिक स्तर की कमी को स्वाध्याय एवं सत्साहित्य के अध्ययन से पूरा किया जा सकता है। इससे चिन्तन को समर्थता और वरिष्ठता से आप्लावित किया जा सकता है।

आज भौतिकवाद का प्रचुर प्रचलन है। भौतिक कारणों से मनुष्य के प्रभावित होने की मान्यता ही सर्वत्र छायी हुई है। चारों ओर भौतिकवाद का ही प्रभाव दृष्टिगोचर होता हैं हर व्यक्ति स्वयं को अधिक प्रतिष्ठित एवं सम्मानित करने का आधार इसी को मानता है। आज जो जितना अधिक भौतिक साधन-संसाधनों से समृद्ध है, वही प्रतिष्ठित एवं लोकपूज्य माना जाता है। आज भौतिकवाद की आंधी, अपने प्रवाह में सभी को उड़ाते चली जा रही है और आश्चर्य यह है कि सभी इस आंधी में बहने में विवशता नहीं, सम्मानित महसूस करते हैं। इसलिए प्राय: सभी का प्रयत्न अधिक सम्पन्न बनने में है।

विरले लोग ही मिलेंगे जो वस्तुस्थिति की महत्ता को समझते हैं और मानवीय चिन्तन अपने आप में प्रचंड शक्तिसम्पन्न है। मानवीय चिन्तन में इतनी क्षमता और सामर्थ्य है कि परिस्थितियों की दशा में परिवर्तन कर सकता है एवं इसकी दिशा को मोड़ सकता है। अद्‌भुत एवं आश्चर्यजनक सामर्थ्य होती है सकारात्मक चिन्तन प्रक्रिया में। इसके प्रवाह से दृष्टिकोण में अन्तर होने पर व्यक्तित्व की समूची संरचना एवं ढांचा परिवर्तित हो जाते हैं। दिशा बदलने से परिस्थितियों में मात्र अन्तर ही नहीं आता, बल्कि सुधार भी होता है। इसे जीवन में अनुभव किया जा सकता है। यह प्रत्यक्ष दिखाई देने वाला सत्य है। परिस्थितियों में अनुकूलता किसी के हाथ की बात नहीं है, परन्तु मन:स्थिति को कोई भी तोड़-मरोड़ सकता है। इस प्रक्रिया को स्वाध्याय के माध्यम से आसानी से सम्पन्न किया जा सकता है।

भौतिकवाद के इस वेग का आधार बुद्धिवाद है। बुद्धिवाद ने इन दिनों उत्साहवर्द्धक प्रगति की है। आज हर चीज के लिए पग-पग पर तर्क, तथ्य एवं प्रमाण की साक्षी मांगी जाने लगी है। श्रद्धा को एक प्रकार से अमान्य ही ठहरा दिया गया है, अस्वीकार कर दिया गया है। हर महत्त्वपूर्ण तथ्य के संदर्भ में यह अपेक्षा की जाती है कि उसकी पुष्टि विज्ञान के सहारे होनी चाहिए। विज्ञान ही इसके एकमात्र समाधानकर्ता के रूप में उपस्थित हुआ है। विज्ञान के बिना किसी भी चीज की सत्यता एवं प्रामाणिकता को संदेह की दृष्टि से देखा जाने लगा है। यहाँ तक कि तर्क के आधार पर अपनी विशिष्टता सिद्ध करने वाला दर्शनशास्त्र भी अपने प्रतिपादनों को सही सिद्ध करने के लिए वैज्ञानिक पुष्टि का मुँह ताकता है।

वर्तमान स्थिति अत्यन्त विचित्र है और विचित्रता से भरी इसकी हर गतिविधियाँ है। आध्यात्मिक तत्त्वदर्शन का रथ चिरकाल से श्रद्धा के सहारे चला आ रहा था। इसकी गति एवं वेग को मापने का कहीं कोई प्रयास नहीं हुआ और इस स्थिति-परिस्थिति को कोई भी तोड़-मरोड़ सकता है, इसकी कल्पना तक नहीं की गई थी। अब स्थिति भिन्न हो गई है।

अब कहीं कोई मान्यता मिली भी तो शास्त्र या संस्कृति के सहारे नहीं, बुद्धिवाद और विज्ञानवाद के पहियों का सहारा लेकर ही अपनी गाड़ी आगे चलानी पड़ती है। यही है विवशता, जिसके कारण आध्यात्मिक तत्त्वदर्शन का प्रतिपादन नए सिरे से नए आधार पर करना होगा। यह कार्य उतना ही कठिन है, जितना कि भौतिकवादी मान्यताओं का नये सिरे से निर्धारण। ये दोनों कार्य एक साथ करने की आवश्यकता है। इसके लिए समूचे चिन्तन क्षेत्र को स्वाध्याय के माध्यम से मथना होगा।

वर्तमान परिवेश एवं परिस्थितियों में लोक-चिन्तन का निर्धारण भागीरथ प्रयास है, समुद्रमंथन के समान है। यदि इस प्रक्रिया को ठीक तरह से सम्पन्न किया जा सके तो दो लाभ होगें। आज के युग का हलाहल है-अहंकार, स्वार्थ, संकीर्णता तथा तृष्णा का व्यामोह। इसी हलाहल के प्रभाव से इतने समर्थ एवं सक्षम चिन्तनशील ऋषि की भूमिका निभाने वाला मनुष्य पाश्विक एवं पैशाचिक प्रवृत्तियों में तल्लीन हो रहा है। इसकी सारी ऊर्जा इसी में खपकर नष्ट हो रही है। वर्तमान समय में उसे सही माना जाता है, जिसे दूरदर्शिता और उदारता को अनावश्यक ठहराने और कुसंस्कारों में मदमस्त रहने में ही प्रसन्नता मिलती हैं आज का सर्वोपरि पुरुषार्थ है कि लोक-मानस से इन्हीं दोनों अनुपयुक्तताओं का निष्कासन किया जाए। यही भागीरथी पुरुषार्थ है। इसके सामने वह भी उत्तरदायित्व है कि जो निकृष्ट दर्शन से खाली हुए स्थान को उत्कृष्टता के प्रबल प्रतिपादन से तत्काल भर सके। यह दोहरा काम, दो मोर्चों पर एक साथ लड़ने के समान है। स्वाध्याय के माध्यम से, ये दोनों ही काम एक साथ सफलतापूर्वक किये जा सकते हैं।

चिन्तन के दो पक्ष है-एक बुद्धि, दूसरा भाव। बुद्धि का क्षेत्र मस्तिष्क और भाव का क्षेत्र हृदय माना जाता है। हृदय का तात्पर्य रक्त परिसंचरण करने वाला हृदय तंत्र नहीं, वरन् अंतश्चेतना का वह

सच्ची प्रार्थना से अकर्मण्यता कदापि उत्पन्न नहीं होती।

Why is Discipline Necessary?

Pradeep Tyagi

Discipline means to follow rules and regulations wherever we live. There are some rules and regulations whether it is our school, college, company, organization, our society etc we have to follow these rules and regulations. There are some restrictions also for us. We have to live under these restrictions for maintaining the sweetness of relation, social balance and proper development.

We are human being. We want development, balanced life and a balanced society. If we do not follow discipline honestly and properly the human life will not remain better than the life of animals. A man is just like an animal without discipline. His life and actions become aimless. In the present age indiscipline is a great evil. Indisciplined actions cause crime and irregularity. The whole set up of society is disturbed. The safety and security of life becomes unguarded.

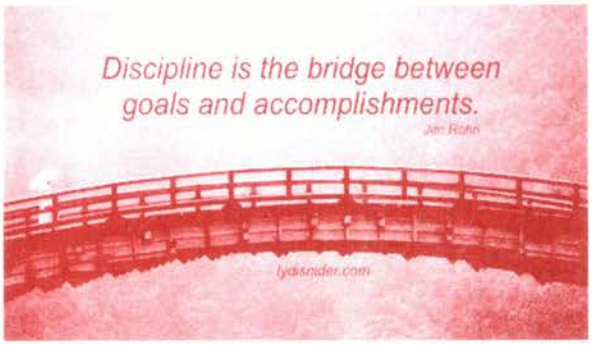

Discipline is very essential in life. It is needed at every step of life. Without discipline there is social imbalance. Crime also prevails throughout. The sweetness of human life disappears. There is the bondage of duties and rights. One should not avail the rights without performing one's duties. If a person is attentive in his duties he gets his right. We should not encroach the rights of others.

Discipline is an essential element at every step of life. It builds character. It develops strength and unity. It creates a sense of co-operation. So discipline must be taught from the very childhood. It is the key to success in life.

Pradeep Tyagi

Warden, Gurukul KKR.

मर्मस्थल है, जहाँ आकांक्षाओं और आस्थाओं के समन्वय से बना अन्त:करण प्रतिष्ठित है और इस अन्त:करण के कारण ही हृदय का स्थान सर्वोपरि होता है, यदि यह स्थान पवित्र, परिष्कृत एवं परिमार्जित रहा तो व्यक्तित्व का उद्गम, आधार, नाभिक एवं ध्रुवकेन्द्र यही बन जाता है। सत्प्रवृत्तियों को अपनाने एवं दुष्प्रवृत्तियों को अस्वीकार करने वाली भाव तरंगे यहीं से उठती हैं।

बुद्धि का उपयोग, तथ्यों को समझने तक सीमित है, तर्क और तथ्य को जुटाने तक सीमित है। स्वभावत: बुद्धि जिन निष्कर्षों पर पहुंचती है, वे भौतिक सुख-सुविधाओं के पक्षधर ही होते हैं, परन्तु उत्कृष्टता को अपनाने के लिए निश्चत ही आकर्षणों पर नियंत्रण रखकर उपभोग में संयम बरतना होता है। इस निर्णय पर पहुंचना बुद्धि का नहीं, भावना का काम है। नवयुग का सृजन, भाव-संवेदनाओं की पृष्ठभूमि पर होगा। इस तल को अध्यात्म की भाषा में, भक्ति के रूप में निरूपित किया जाता हैं प्रकारांतर से श्रद्धा भी इसी को कहते हैं। इसी भक्ति-भावना का अवलंबन लेकर ही त्याग, बलिदान, तप-तितिक्षा, परमार्थ आदि सम्पन्न किये जा सकते हैं। यही वजह है कि अल्पशिक्षित एवं अभावग्रस्त परिस्थितियों में रहकर भी असंख्यों ने महान परमार्थ कार्य किये हैं। इसका मूल कारण उनकी आदर्शवादी अंत:प्रेरणा ही थी, जिसके भाव-प्रवाह में उन्होंने संकटों की परवाह न करते हुए त्याग, बलिदान के अद्भुत एवं आश्चर्यजनक उदाहरण प्रस्तुत किये।

वर्तमान चिन्तन-चेतना को परिष्कृत करने के लिए ऐसे सत्साहित्य की आवश्यकता है, जो मनुष्य को जीवन जीने की कला की शिक्षा प्रदान करें व आत्मिक सामर्थ्य को विकसित करने के सूत्र बताए, चेतना व प्रकृति के बीच समन्वयकारी सिद्धान्त को स्पष्ट करे तथा अध्यात्म और विज्ञान के बीच सामंजस्य का सार्वभौम तत्त्वदर्शन बता सके। अत: हमें स्वाध्याय के द्वारा अपनी चिंतन-चेतना को परिष्कृत करना चाहिए और जीवन में स्वाध्याय को स्थान देना चाहिए। स्वाध्याय से हमारी बुद्धि का विकास होता है साथ ही बोलने की कला में निखार और उच्चारण विशुद्ध होता है।

मौन और एकान्त आत्मा के सर्वोत्तम मित्र हैं।

उत्तम शिक्षा का अभाव ही पतन का कारण

वर्तमान में हमारे समाज के विद्यार्थियों का चाल-चलन बहुत बिगड़ चुका है। वे सही राह पर चलने की बजाए दुर्व्यसनों में फंस चुके हैं। शराब पीते हैं, जुआ खेलते है, चोरी- जारी इत्यादि दुष्कर्म करते हैं। इनके पीछे कारण क्या हैं? मुख्य कारण है- उत्तम शिक्षा का अभाव। शिक्षा किसे कहते हैं? जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मता, जितेन्द्रियता आदि की वृद्धि होवे और इनसे अविद्यादि दोष छूटें, उसे शिक्षा कहते हैं।

आज बालक विद्यालय जाते हैं, वहाँ अध्यापक पाठ्यक्रम की पुस्तकें पढ़ाकर अपना कर्त्तव्य पूरा हुआ समझते हैं। कुछ बालक तो विद्यालय में ही नहीं जाते। घर से तो विद्यालय का नाम लेकर जाते हैं लेकिन आवारा घूमते रहते हैं, मौज-मस्ती करते रहते हैं। छुट्टी के समय पर घर आ जाते हैं। ऐसे में माता-पिता को ध्यान देना चाहिए। उन्हें अच्छे विद्यालयों में भेजना चाहिए। उत्तम गुरुओं, अध्यापकों के संरक्षण में रखें।

अध्यापक बालकों को पाठ्यक्रम के साथ-साथ उत्तम संस्कार भी दें कि कैसे समाज में रहना है? कैसे दूसरों के साथ व्यवहार करना है? माता-पिता प्रारम्भ से ही अपनी सन्तान को ऐसे संस्कार दें कि वह आगे चलकर स्वयं देखने, समझने लग जाए कि क्या गलत है और क्या सही है? जब बालक छोटा होता है तो वह बहुत कुछ देख-देखकर ही सीखता है। जैसे किसी बालक ने चाकू या माचिस या फिर ऐसा कोई सामान ले लिया जिससे नुकसान हो सकता है, तो माँ उससे लेकर उस सामान को तुरन्त छिपा देती है और कहती है कि बन्दर ले गया। बालक देख रहा होता है कि माँ ने छिपाया है, बन्दर नहीं लेकर गया। माँ झूठ बोल रही है। दूसरा उदाहरण देखिए -एक बालक का पिता देखता है कि व्यापारी रुपये लेने के लिए आ रहा है, तो वह अपने बेटे से कहता है कि एक व्यक्ति आ रहा है उससे कह देना कि पिताजी घर पर नहीं है। बालक अबोध होता है। उसने वैसा ही कह दिया जैसा पिताजी ने कहा। अब बालक ने सोचा कि पिताजी तो घर पर ही हैं, फिर भी कह रहे हैं कि कह देना कि पिताजी घर पर नहीं हैं। अब आप ही देखिए, ऐसे में बालक झूठ बोलना क्यों नहीं सीखेगा? ठीक इसी प्रकार बालक बहुत-सी गलत और बहुत-सी ठीक बातें सीखता है। आवश्यक यही है कि माता-पिता बचपन से ही बालक को ऐसे संस्कार दें कि वे आगे चलकर सही राह पर चलें और अच्छे, सभ्य नागरिक बनें।

सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय समुल्लास में लिखा है-'**मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद**' अर्थात् जब माता-पिता व आचार्य, ये तीनों उत्तम शिक्षक होते हैं, तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है। वह सन्तान

धन्य होती है जिसके माता-पिता, धार्मिक, विद्वान् व सभ्य होते हैं। इसलिए माता-पिता अपनी सन्तान को पहले घर पर शिक्षा दें, उसके बाद लड़के को लड़कों की पाठशाला में और लड़कियों को लड़कियों की पाठशाला में प्रवेश करायें। जो माँ-बाप ऐसा करते हैं, उन्हीं की सन्तान सभ्य, धार्मिक, विद्वान् तथा सुशिक्षित होती है।

व्याकरण महाभाष्य का प्रमाण देखिए -

सामृतैः पाणिभिर्घ्नन्ति गुरुवो न विषोक्षितैः।
लालनाश्रयिणो दोषास्ताडनाश्रयिणो गुणाः।।

अर्थात् जो माता-पिता व आचार्य अपने शिष्य व अपनी सन्तान की ताड़ना करते हैं, मानों वे अपने हाथों से अमृत पिला रहे हैं और जो लाड़-प्यार करते हैं तो समझना कि वे विष पिला रहे हैं क्योंकि ज्यादा लाड़-प्यार से बच्चा बिगड़ता है। माता-पिता, आचार्यगण ईर्ष्या, द्वेष आदि से ताड़ना न करें और अन्दर से अपनी कृपादृष्टि बनाये रखें।

माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा।।

अर्थात् वे माता-पिता अपनी सन्तानों के लिए शत्रु हैं जो उन्हें विद्या प्राप्ति नहीं कराते। वे विद्वानों की सभा में ऐसे शोभित नहीं होते जैसे हंसों के बीच बगुला। इसलिए माता-पिता का कर्त्तव्य है कि अपनी सन्तान को सभ्यता और उत्तम शिक्षा ये युक्त करें।

अन्त में एक बात विद्यार्थियों के लिए कि वे गलत बात किसी की भी न मानें, चाहे वे आपके माता-पिता हों या आपके अध्यापक, आचार्य हों। सही बात का हमेशा साथ दें, गलत बात का विरोध करें। उसके लिए यह न सोचें कि ये हमें दंडित करेंगे। दबाव में आकर कोई भी गलत बात न मानें। उसको आराम से प्यार से कह दें कि यह बात सही नहीं है। जिस दिन से ऐसा होने लग जाएगा तो समझना कि उस दिन से इस समाज का, इस देश कल्याण सम्भव है।

कु० रविता आर्या
गोयला कलां, झज्झर (हरियाणा)

प्रार्थना हमारे अधिक अच्छे, अधिक पवित्र होने की आतुरता को सूचित करती है।

भूलकर भी न पीएं फ्रिज का ठंडा पानी !

मित्रों! कितनी भी गर्मी पड़े फ्रिज का ठंडा पानी या बर्फ मिलाया हुआ पानी कभी मत पियो। मित्रों पहले यह जान लीजिए आयुर्वेद के अनुसार ठंडे पानी की परिभाषा क्या है? शरीर का तापमान है 37 डिग्री सेल्सियस। 37 डिग्री से नीचे का सभी पानी ठंडा है! 37 डिग्री तक पानी शरीर सहन कर सकता है! तो बात ऐसी है मित्रों जब भी आप फ्रिज का ठंडा पानी पीते हैं तो गर्म पेट में ठंडा पानी जाता है। अब पेट आपका गर्म है और पानी ठंडा!! तो अंदर जाकर झगडा होता है या तो पेट पानी को गर्म करता है या पानी पेट को ठंडा करता है। आप एक मिनट के लिए मान लीजिए आपने बहुत ठंडा पानी पिया है और पानी ने पेट को ठंडा कर दिया। पेट ठंडा होते ही हृदय ठंडा हो जाएगा क्योंकि पेट और हृदय का आपस में सम्बन्ध है। हृदय के ठंडा होते ही मस्तिष्क ठंडा हो जाएगा। क्योंकि इन दोनो का भी आपस में सम्बन्ध है और मस्तिष्क के ठंडा होते ही शरीर ठंडा हो जाएगा। शरीर के ठंडा होते ही आपको घर से बाहर निकालकर फेंक दिया जाएगा। वह सब लोग जो आपको लिपटकर प्रेम करते हैं, वो आपको छूना भी पसंद नही करेंगे क्योंकि शरीर ठंडा हो गया। और वह एक ही बात ही बोलेंगे जल्दी लेकर जाओ क्यों रखा हुआ है? अतिंम संस्कार कब है? क्योंकि यहाँ शरीर के ठंडा होन का अर्थ आपकी मृत्यु से है। तो मित्रो ये ठंडा पानी पीने की गलती मत करिए।

अब इस सारी बात का दूसरा भाग समझिए!

जब बहुत ठंडा पानी आप पीयेंगे तो पेट उस पानी को गर्म करेगा। क्योंकि उसे आपको जिंदा रखना है। तो ये भगवान की व्यवस्था बनाई हुई है लेकिन गर्म करने के लिए उसको ऊर्जा चाहिए। अब ऊर्जा कहाँ से आएगी? ऊर्जा आएगी रक्त में से। तो सारे शरीर का खून पेट में आएगा। अब थोडी देर के लिए कल्पना कीजिए सारे मस्तिष्क का खून पेट में चला गया। और हृदय का खून पेट में चला गया। आंतो का खून पेट में आ गया। तो हर एक अंग को खून की कमी आएगी। मस्तिष्क को अगर 3 मिनट ब्लड सप्लाई रुक गई तो ब्रेन डैड हो जाएगा, इस तरह हृदय को एक से ड़ेढ मिनट ब्लड़ सप्लाई रुक गई तो हृदय डैड हो जाएगा। बाकी सभी अंग तो ऐसे ही खत्म हो जाएगें। इसलिए कहा गया है कि ठंडा पानी पीना बहुत ठंडा रिस्क लेने के बराबर है।

अब इस सारी बात का तीसरा भाग समझिए!

हमारे शरीर मे दो आंत होती है छोटी आंत और बड़ी आंत। बड़ी आंत का काम हमारे शरीर में से मल को बाहर निकालना है। जो भी हम खाते हैं, पचने के बाद जो अवशेष बचता है वो मल के रूप में बड़ी आंत द्वारा बाहर निकलता है। बड़ी आंत देखने में बिल्कुल एक खुले पाइप की तरह होती है अब जैसे ही एक दम से आप ठंडा पानी पीते हैं तो ये बड़ी आंत एकदम से सिकुडकर बंद हो जाती है अब बार-बार आपने ठंडा पानी पी-पी कर इसे पूरा बंद कर दिया। तो सुबह आपको स्टूल पास नहीं होगा, टॉयलट नहीं आएगी आप जोर लगा-लगाकर पागल हो जायेंगे लेकिन पेट साफ नही होगा। अर्थात आपको कब्जियत का रोग हो जाएगा आयुर्वेद में कब्जियत को मदर ऑफ डिसीज कहते है। सभी बीमारियों की जड़ है कब्जियत। अगर आपको कब्जियत का रोग हो गया और कुछ लंबे समय तक रहा तो एक-एक करके आपको सभी बीमारियाँ आएंगी। यूरिक एसिड, कोलस्टोल, हार्ट ब्लॉकेज, शुगर आदि। इसलिए फ्रिज का ठंडा पानी आपके शरीर के लिए बहुत ही ज्यादा खतरनाक है।

मित्रों! अमेरिका और यूरोप वाले बहुत अधिक ठंडा पानी पीते है, वे पानी को 5-6 दिन फ्रिज में रखते हैं फिर उसमें आइस क्यूब डाल-डालकर पीते हैं। इसका परिणाम क्या होता है, सुबह एक-एक घंटे वे टॉयलेट में बिताते हैं, पेट साफ ही नहीं होता। कभी आप उनसे पूछिए कि आपने ये टॉयलेट सीट कोबेट सीट अर्थात् बैठने वाली क्यों बनवाई है? भारतीय सीट क्यों नहीं बनवाई? आपको जवाब मिलेगा कि भाई, भारतीय डिजाइन वाली सीट पर आप 5 मिनट से ज्यादा नहीं बैठ सकते क्योंकि जो पॉजीशन है वह 5 मिनट में ही थका देती है, हम लोगों को घंटा-घंटा बैठना पड़ता है क्योंकि पेट साफ नहीं होता इसलिए ये वेस्टर्न सीट ही चुनते हैं। इतना ही नहीं ये लोग टॉयलेट में पुस्तक, अखबार, मैगजीन आदि भी रखते हैं क्योंकि घंटे भर बैठना है तो टाइम पास के लिए भी तो कुछ चाहिए! वैसे टॉयलेट किताबें या अखबार पढ़ने के लिए नहीं बना लेकिन उन लोगों की मजबूरी है। अब हमारे देश के कुछ पढ़े-लिखे मूर्खों ने उनकी नकल कर टॉयलेट में अखबार, किताबें आदि लेकर जाना शुरू कर दिया है और ऐसा करके वे अपने आप को आधुनिक समझने लगे हैं मगर यह गलत है। मित्रों ! बिना सोचे-समझे जब किसी की नकल की जाती है तो ऐसा ही होता है। उन लोगों की मजबूरी को हम अपना फैशन बना रहे है, बड़ी विडम्बना है।

मित्रों! इन सारी समस्याओं का मूल कारण है ठंडा पानी। ज्यादा ठंडा पानी आप कभी मत पीना यह आपके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। आपको अगर पीना है तो मिट्टी के घड़े में रखे पानी को पीयें क्योंकि मिट्टी के घड़े में रखे पानी को आप जब भी चैक करेंगे, उसका तापमान 36 से 33 डिग्री के आसपास होगा। हमने पहले ही बता दिया है कि आपके शरीर का सामान्य तापमान 37 डिग्री रहता है और घड़े के पानी का तापमान भी लगभग आपके शरीर के बराबर ही होता है, इसलिए घड़े का पानी कभी आपको नुकसान नहीं पहुंचा सकता। यही कारण है कि सदियों पहले आयुर्वेद में कहा गया है कि

हम आस्तिक हैं या नास्तिक : एक चिन्तन

आइए! सबसे पहले तो यह जान लें कि आस्तिक और नास्तिक कहते किसको हैं। आपने अक्सर सुना होगा कि ईश्वर में विश्वास करने वाला आस्तिक और ईश्वर को न मानने वाला या ईश्वर में विश्वास न रखने वाला नास्तिक होता है। मनुस्मृति के अनुसार **'नास्तिको वेदनिन्दकः'** अर्थात ईश्वरीय ज्ञान वेद की निन्दा करने वाला नास्तिक होता है लेकिन क्या सब लोग वेदों को नहीं मानते? क्या हम लोग ईश्वर को नहीं मानते? आज तो सब लोग अपने आप को ईश्वर भक्त कहते हैं, वेद का मानने वाला कहते हैं लेकिन क्या वास्तव में हम ईश्वर विश्वासी हैं? वेदों की मानते हैं? हमारे विचार कैसे हैं? हम ईश्वर के अस्तित्व को केवल मानते हैं या ईश्वर कैसा है, ये जानते भी हैं? ईश्वर के प्रति अपने दृष्टिकोण को जानने से पूर्व हमें स्वयं का निरीक्षण करना होगा अर्थात् अपने आपको देखना होगा। जिस प्रकार भौतिक जगत में स्वयं को देखने के लिए आईना बनाया गया है ठीक इसी प्रकार आध्यात्मिक क्षेत्र में अपने आपको देखने के लिए हमारे ऋषियों ने आत्म निरीक्षण की परम्परा प्रातः सायं **''ब्रह्मयज्ञ''** अर्थात् **'संन्ध्या'** के रूप में बनायी। सर्वप्रथम इस यज्ञ के माध्यम से हम स्वाध्याय करते हैं, किसका? वेदादि ग्रन्थों का एवं आर्ष साहित्य का अर्थात् ऋषिकृत ग्रन्थों का और स्वयं का। स्वयं का अध्ययन करने को ही आत्म निरीक्षण करना कहते हैं अर्थात अपने अन्तःकरण में झाँकते हैं और देखते हैं कि मैं क्या कर रहा हूँ और मेरा जीवन आस्तिक है या नास्तिक? क्या वास्तव में ईश्वर विश्वासी ही आस्तिक होता है? इसके लिए नास्तिक की परिभाषा को समझना होगा। एक दार्शनिक दृष्टिकोण के अनुसार संसार में तीन प्रकार के नास्तिक होते हैं :-

पहले प्रकार के नास्तिक वे होते हैं जो ईश्वर को मानते ही नहीं। उनके अनुसार ईश्वर नाम की सत्ता है ही नहीं। न ईश्वर है, न धर्म है, न आत्मा है और न परमात्मा। कुछ भी नहीं है। ये संसार अपने आप चल रहा है बस। ईश्वर की सत्ता को बिल्कुल मानते ही नहीं जैसे कम्यूनिस्ट लैनिनवादी होते हैं इस प्रकार के नास्तिक लोग स्टेटमेंट देते हैं कि **'देयर इज नो एजिस्टेंट आफ एनी सुप्रीम लोर्ड हू क्रिएट इन दिस यूनिवर्स एंड कन्ट्रोल'** अर्थात ऐसी कोई सत्ता नहीं जो सारे संसार को ब्रह्माण्ड को चला रही है। ईश्वर नाम की चीज को मानते ही नहीं, बिल्कुल है ही नहीं बस ऐसे ही संसार चल रहा है।

दूसरे प्रकार के नास्तिक वे हैं जो ईश्वर को मानते हैं, ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करते हैं लेकिन जैसा ईश्वर का स्वरूप है उससे भिन्न अर्थात उल्टा मानते हैं जो कि मिथ्याज्ञान है। कहने का तात्पर्य है कि जो वस्तु जैसी है उसे वैसा ही न कहना और वैसा ही न मानना मिथ्याज्ञान है जैसे ईश्वर है तो सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, निराकार लेकिन ये जो दूसरे प्रकार के नास्तिक हैं वे उसे एकदेशी एक जगह पर मानते हैं, इसलिए वे नास्तिक कहलाते हैं।

तीसरे प्रकार के नास्तिक देखिए कैसे हैं, ये ऐसे हैं जो ईश्वर को जैसा है वैसा ही मानते हैं लेकिन उसके अनुसार आचरण व व्यवहार नहीं करते अर्थात ईश्वर को मानते तो हैं पर ईश्वर की आज्ञाओं को पालन नहीं करते और ईश्वर की आज्ञाओं को बतलाने वाले एकमात्र वेद है जो ईश्वर प्रदत्त है, मनुष्कृत नहीं।

आप यह सोच रहे होंगे कि लेखक यह सब बताकर कहना क्या चाहता है? तो उत्तर सुनिए यह सब कहने का मेरा मंतव्य केवल इतना ही है कि हम आस्तिक अर्थात ईश्वर को मानने वाले तो हों लेकिन हमारे आचरण और हमारे व्यवहार से ही लोगों को ये पता लगना चाहिए कि हमारा ईश्वर पर विश्वास अटूट है जिसे कोई दुःख कोई परेशानी हिला नहीं सकती। कहने का मतलब है कि आज लोग केवल शाब्दिक रूप से बोल देते हैं कि हम ईश्वर को सर्वव्यापक मानते हैं, कर्मफल दाता मानते हैं लेकिन इस सत्य को अन्तर्मन से स्वीकार नहीं करते। एक छोटी-सी बात से आपकी समझ में आ जाएगा कि मैं कहना क्या चाहता हूँ? आपने पोटेशियम साईनाइट के विषय में तो सुना ही होगा। कितना भयंकर विष होता है। अगर सुई की नोंक के बराबर भी जिव्हा पर रख दिया जाए तो तुरन्त मृत्यु हो जाती है। जब आपको इस बात की जानकारी है कि यह इतना भयंकर विष है तो यदि आपके सामने लोकर पोटेशियम साईनाइट रख दिया जाए और

भूलकर भी न पीएं... पिछले पृष्ठ का शेष

घड़े का पानी सबसे अच्छा होता है और हमारे देश में पुराने समय से लोग घड़े का पानी पीते आएं हैं।

इसका एक अहम् कारण और भी है। मिट्टी का घड़ा हमारे देश में करोड़ों गरीब कुम्हारों द्वारा बनाया जाता है। इससे उनकी रोजी-रोटी जुड़ी है मगर जब से प्रेशर कुकर, प्लास्टिक की बोतलें, थर्माकॉल के गिलास, फ्रिज आदि उपकरण आए हैं तब से देश के करोड़ों कुम्हारों का रोजगार छिन गया है। इतना ही नहीं दीवाली पर पहले लोग मिट्टी के दीए अपने घरों में लाते थे मगर आज उनकी जगह भी विदेशी लाईट्स ने ले ली है। दीवाली जैसे त्योहार पर पहले हम अपनी लक्ष्मी विदेशी देश को (उनका सामान खरीदकर) दे देते हैं और रात में पूजा करते हैं, कामना करते हैं कि हमारे घर में लक्ष्मी सुख और समृद्धि लेकर आए। यदि हम सभी पुरानी परम्परा को जीवित रखते हुए दोबारा से घड़े का पानी पीना आरम्भ करें तो न केवल हमारा स्वास्थ्य ठीक रहेगा बल्कि इससे देश के लाखों गरीब परिवारों को रोजगार भी मिलेगा।

साभार : डॉ. संजीव गोयल

आत्मसन्तोष सबसे बड़ी प्रार्थना है।

आपको उसे छूने के लिए कहा जाए तो क्या आप उसे छूने की गलती करेंगे? कदापि नहीं करेंगे क्योंकि आपने इस सत्य को जानने के बाद अपने आचरण में ग्रहण कर लिया है कि इसे छूने से मृत्यु हो जाएगी इसलिए किसी भी कीमत पर कोई भी उसे छूना नहीं चाहता और सतर्क रहेगा, सावधानी बरतेगा कि कहीं गलती से भी उस पर हाथ न लग जाए। ठीक ऐसे ही यदि हमारा ईश्वर के प्रति ज्ञान यथार्थ है कि वही हमारे कर्मो के फल का देने वाला है, सर्वव्यापक और सर्वान्तर्यामी प्रभु हमें ज्यादा फल देता है तो हम कभी भी चोरी नहीं करेंगे, कभी असत्य आचरण नहीं करेंगे, कभी छल-कपट नहीं करेंगे, कभी किसी से झूठ नहीं बोलेंगे, किसी को धोखा नहीं देंगे क्योंकि ईश्वर की सत्ता को मानने वाला व्यक्ति सतर्क रहता है।

ईश्वर के प्रति यथार्थ ज्ञान रखने वाला व्यक्ति सावधान रहता है झूठ बोलता ही नहीं, छल-कपट करता ही नहीं क्योंकि उसे पूर्ण विश्वास है कि कालान्तर में उसे उसके अच्छे व बुरी सब कर्मो का फल ईश्वर देगा ही क्योंकि वह सदैव हमें देख रहा है, सुन रहा है। इस प्रकार के मन में आने वाले भाव उसकी आस्तिकता के परिचायक हैं। मैं इतना ही कहूँगा कि यदि आपको ये पता है कि बिजली के नंगे तार को छूने से करंट लगता है और मृत्यु हो जाती है तो क्या आप कभी भी नंगे तार को हाथ लगाएंगे? एक्सप्रैस ट्रेन के आने के समय कितने लोग है जिनको जबरन उस पटरी पर लिटाया जाए तो विरोध नहीं करेंगे? कितने ऐसे लोग हैं जिनको तैरना नहीं आता और बिना किसी कोच की सहायता के पानी में उतरना चाहेंगे? क्या अनाज आदि में रखने वाली दवा सल्फास आपको खाने के लिए दिया जाए तो आप खाएंगे? कदापि नहीं। क्यों नहीं क्योंकि इनके विषय में आपकी जानकारी या ज्ञान सत्य है कि ऐसा करने पर मृत्यु संभव है।

आज अधिकांश व्यक्तियों का ईश्वर पर विश्वास है ही नहीं इसलिए वे भिन्न-भिन्न स्थानों पर जाकर लुटते-पिटते रहते हैं। ठीक-ठीक जानकारी ईश्वर के विषय में न रहने से स्वाभाविक रूप से अपने हृदय में बसी ईश्वर भक्ति को कभी किसी गुरु में टेक देते हैं, कभी काल्पनिक देवी-देवताओं में जिनकी मूर्ति को अपने घर में भी रखते हैं। इस प्रकार अंधविश्वास, अंधश्रद्धा और अंधभक्ति आदि के शिकार होकर ईश्वर पूजा के नाटक में फंसकर अपने साथ-साथ अपने बाल-बच्चों की जीवन-शैली को भी सीधी सरल राह पर कभी खड़ा नहीं कर पाते। परिणामस्वरूप सच्चे ईश्वर की सच्ची उपासना से कोसों दूर रहकर मनुष्य जीवन को पशु जीवन से भी बद्तर बना देते हैं।

कुछ बुद्धिमान व्यक्ति जिन्हें ईश्वर के सच्चे स्वरूप का बोध तो है, बुद्धिपूर्वक जानकारी भी रखते हैं आर्यसमाजी बने हैं। वे अंधश्रद्धा व अंधभक्ति के शिकार भी नहीं हैं लेकिन मनुष्य होने के नाते अन्य मनुष्यों को जो गलत रास्ते पर हैं, उन्हें सही रास्ता दिखाने में असमर्थ रहते हैं क्योंकि उनमें बस एक ही कमी है कि वे ईश्वर की सच्ची उपासना को जानते हुए भी अपने जीवन में निरन्तर नित्यकर्म के रूप में इस पद्धति को अपना नहीं पाए फिर उपासना का फल कहाँ मिलने वाला है। अन्य मत-मतान्तरों के प्रभाव में आने वाले लोगों की तरह वे केवल बोल देते हैं कि ईश्वर बलों का देने वाला है, सर्वशक्तिमान है परन्तु क्या आपने कभी विचार करके देखा है कि जब जीवन पथ पर चलते-चलते कष्ट और बाधाओं का सामना करना पड़ता है, रूकावटें आती है, वियोग होता है, साथी छूट जाता है, विश्वासघात होता है, झूठे आरोप लगाए जाते हैं तो उस समय व्यक्ति की क्या स्थिति होती है? वह अपना आपा खो बैठता है और प्रत्यारोप लगाता है, दूसरे की हानि कर देता है और बेचैन हो जाता है।

उस समय उसे ईश्वर पर विश्वास ही नहीं होता कि ईश्वर बलों का देने वाला है, आँख बन्द करके चुपचाप बैठता ही नहीं, प्रार्थना करता ही नहीं कि हे सर्वशक्तिमान प्रभु! हे बलों के दाता परमेश्वर, मुझे आत्मिक बल दीजिए, मानसिक बल दीजिए, शारीरिक बल दीजिए, बौद्धिक बल दीजिए, हिमालय जितना मुझे धैर्य दीजिए, मुझे सहन करने की शक्ति दीजिए। बताओ कितने लोग हैं जो दैनिक प्रातः सायं **'ब्रह्मयज्ञ या संन्ध्या'** अर्थात सही वैदिक उपासना पद्धति को नित्य कर्म के रूप में अपना चुके हैं?

बस हमने मान लिया कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है पर वैदिक उपासना के अभाव में ईश्वर की तरफ कदम बढ़ा ही नहीं पाते। ईश्वर हमें बल देगा ऐसा विश्वास लेकर व्यक्ति आँख बन्द करके बैठता ही नहीं, ये इस बात का प्रतीक है, द्योतक है कि बस हमने माना है तो केवल शब्दों में आचरण में नहीं। जिस दिन राम-कृष्ण जैसे महापुरुषों की भांति उन्हें अपना सच्चा आदर्श मानकर हम भी ईश्वर के सच्चे वैदिक स्वरूप को जानकर ईश उपासना को अपने जीवन में अर्थात दैनिक नित्य कर्मों में स्थायी रूप से स्थान दे देंगे उस दिन हम सब राम-कृष्ण के सच्चे अनुयायी बनकर राम-कृष्ण की भाँति ईश्वर भक्त होकर ईश्वर भक्त कहलाने के अधिकारी होंगे। अपने नाम के साथ आर्य कहलाने में गौरव अनुभव करेंगे। कभी गुलाम नहीं रहेंगे और कभी भी दुष्ट अनार्य और नास्तिक लोगों को शासन का अधिकार नहीं देंगे, स्वयं आस्तिक बनकर शासन करेंगे और पूरी पृथ्वी पर वेद के वचन **''अहं भूमिं अददाम आर्याय''** अर्थात 'यह भूमि शासन करने के लिए आर्यो (श्रेष्ठों) को दी है' को सार्थक करेंगे। अतः वेदानुकूल आचरण करने वाला ही धार्मिक होता है उसी को आस्तिक कहते हैं। शेष नास्तिकों की श्रेणी में आते हैं **'नास्तिको वेदनिन्दकः'**।

- गंगाशरण आर्य
सैनी मोहल्ला, ग्राम- शाहबाद मोहम्मदपुर,
नई दिल्ली -61 (मोबाइल : 9871644195)

जिस प्रकार शरीर के लिए भोजन अनिवार्य है, उसी प्रकार आत्मा के लिए प्रार्थना अनिवार्य है।

वर्तमान परिवेश में गुरुकुलीय शिक्षा की समस्याएं

किसी भी राष्ट्र का निर्माता उस राष्ट्र का युवा वर्ग होता है। वह राष्ट्र-निर्माण में नींव का पत्थर साबित होता है अथवा यूँ कहिए रीढ़ की हड्डी बनकर अपने व्यक्तित्व तथा संस्कारयुक्त मर्यादाओं से राष्ट्र को उन्नत दिशा की ओर अग्रसर करता है। अपने ब्रह्मचर्य के तप से समस्त दुर्वृत्तियों को ज्ञानाग्नि में जलाकर भस्म कर देता है। अपने तप:पूत प्रभाव तथा आत्मविद्या से वह राष्ट्र तथा समाज के चरित्र का निर्माण करता है। मनु महाराज कहते हैं -

एतत्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन:।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवा:।।

भारतवर्ष को यह सौभाग्य प्राप्त है कि यहाँ का युवा वर्ग आदर्श चरित्रवान होता है और इस आदर्श चरित्र के पीछे गुरुकुल शिक्षा पद्धति की पृष्ठभूमि रही है। यहाँ का बालक 8 वर्ष की आयु से गुरु का अन्तेवासी बन, समस्त पदार्थ तथा आध्यात्मिक विद्या में निष्णात होकर ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में अपना एक आदर्श स्थापित करता था।

गुरुकुल ही एकमात्र साधन थे जहाँ समाज से दूर बीहड़ जंगल में प्रकृति के विस्तृत आंचल में बैठकर गुरु से त्याग भाव तथा श्रद्धापूर्वक यज्ञ कर्म करते हुए अपने सम्पूर्ण जीवन को यज्ञमय बनाया जाता था। आचार्य के सान्निध्य को प्राप्त कर ज्ञान की अग्नि से स्वयं प्रकाशित होकर सम्पूर्ण समाज को ज्ञानरूपी प्रकाश से प्रकाशित करता था। ज्ञान, कर्म, उपासना का साक्षात्कार कर उसके अनुरूप ही जीवन यापन करता था और उसी का अनुसरण अन्य लोग भी करते थे। पठन-पाठन की ये परम्परा गुरुकुल के माध्यम से ही संभव हो पाती थी। अथर्ववेद के 11वें काण्ड के 5वें सूक्त का तृतीय **मंत्र इसकी पुष्टि** करता है -

आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृ[illegible]
तं रात्रीस्तिस्र [illegible] तं जातं द्रष्टु[illegible]

वह अष्टवर्षीय बालक जब गुरुकुल में जाता था तब गुरु (आचार्य) उस ब्रह्मचारी को अपने गर्भ के अंदर (गुरुकुल में) धारण कर उसका भरण-पोषण करता था। यहाँ पर तीन रात्रि पर्यन्त अपने उदर में रखने का तात्पर्य यह है कि तीन विद्या ज्ञान, कर्म, उपासना जब तक पूर्ण नहीं होती, तब तक गुरुकुल में ही अपने अन्तेवासी बनाकर रखता था। रात्रि का अर्थ है अन्धकार। जब तक ज्ञान कर्म तथा उपासना इन वेदत्रयी से उस ब्रह्मचारी को ओत प्रोत नहीं करता, तब तक वह गुरु के सान्निध्य में ही रहता था। रात्रि का भाव यह भी है कि समस्त प्राणिमात्र रात्रि में सुप्तावस्था में होते हैं अर्थात् सामान्य अवस्था में मनुष्य ज्ञान, कर्म, उपासना इन तीन प्रकार की रात्रि में (सुप्तावस्था या अबोधावस्था) में रहता है। इन तीन अज्ञान अंधकारमयी रात्रि पर्यन्त वह आचार्य से विद्या प्राप्त कर ज्ञान का सूर्य उदय कर जब समाज में प्रवेश करता था तो वहाँ मंत्र कहता है 'तं जातं द्रष्टुम्' (उस बाल को देखने के लिए) 'अभिसंयन्ति देवा:' (विद्वान लोग अभिलाषित) होते थे। जब इस प्रकार के युवा तैयार होंगे तो वह देश विश्वगुरु की पदवी को प्राप्त होगा, इसमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं।

आचार्य दयाशंकर जी

जब से गुरुकुल प्रणाली शिथिल हुई है, तभी से विद्या भी शिथिलता की दिशा में बढ़ी है।

गुरुकुल समाज से दूर घने जंगलों में स्थापित करने के पीछे एक रहस्य था कि बालक में सामाजिक बुराइयों का प्रवेश न हो। बालक में बुराइयों का प्रवेश वैसे ही होता है जैसे लोहा चुम्बक की ओर आकर्षित होता है। बालक का मन चुम्बक सदृश होता है उन्हें सामाजिक बुराइयों से बचाने के लिए गुरुकुलों के अतिरिक्त कोई दूसरा विकल्प है ही नहीं। दूसरा कारण, गुरुकुलों में प्रत्येक बालक समस्थिति में रहता है। चाहे कोई राजा का राजकुमार हो या फिर अति निर्धन सुदामा। सभी के जीवन का स्तर एक-सा होता है, इससे बालक के मन में अहंकार की भावना नहीं पनपती और वह आपसी प्रेमभाव के साथ सामान्य जीवन जीने का अभ्यासी-हो जाता है। गुरुकुल शिक्षा पद्धति में पारिवारिक परिकल्पना का समावेश होता है अत: इसका नाम तद्नुरूप ही रखा गया 'गुरुकुल' अर्थात जैसे पिता का कुल '**पितृकुल**' इसी प्रकार गुरु का कुल 'गुरुकुल' कहलाता है।

जब भी इस पठन-पाठन की मर्यादा का उल्लंघन हुआ तभी समाज में अराजकता का ताण्डव देखने को मिला। इसका उदाहरण महाभारत में द्रोणाचार्य को घर पर ही राजकुमारों को पढ़ाना है। कौरव तथा पाण्डव आदि गुरुकुल में दीक्षित नहीं हुए थे सो उनका जीवन [illegible] सामने [illegible] स्वार्थ और लोभ ने सभी के हृदय में घर कर लिया था। स्वार्थ ने इतना अन्धा बना दिया कि दुर्योधन यह कहने लगा '**सूच्यग्रं नैव दास्यामि विना युद्धेन केशव**' अर्थात राज्य का भाग सूई की अग्रभाग के नोक के बराबर नहीं दूंगा। यह परिणाम था गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति से दीक्षित न होने का। इसके विपरीत दूसरा दृष्टान्त श्रीराम का देखो जिन्होंने गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त की। राम और भरत दोनों ने ही राजसिंहासन को स्वीकार नहीं किया। भरत कहता है राज्य राम का है। राम कहते हैं राज्य भरत का है। अंत में भरत ने 14 वर्षों तक राम की चरण-खड़ाऊं रखकर राज्य का नेतृत्व किया। भरत ने तप, त्याग का जो जीवन व्यतीत किया वह अभूतपूर्व है और यह गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति का ही परिणाम है।

वर्तमान समय में गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति न के बराबर रह गई हैं सह-शिक्षा ने जो अपना भयानक रूप दिखाया है वह सभी को ज्ञात है। आज राष्ट्र व समाज की सभ्यता व संस्कृति तार-तार हो गयी है। साक्ष्य प्रमाण दे रहे हैं कि जो भी समाज को दूषित कर रहे हैं वे बच्चें तथा बूढ़े ही नहीं अपितु कॉलेज में पढ़ने वाले विद्यार्थी हैं। समाज की इस जर्जर अवस्था का कारण धर्म तथा आदर्शहीन सह-शिक्षा प्रणाली

है। कहते हैं **'यथा राजा तथा प्रजा'** आज विद्यालयों व विश्वविद्यालयों में अध्यापन करने वाले गुरु स्वयं ही आचरणहीन होकर अराजकता के घेरे में खड़े हैं। वह विद्यालय से पर्याप्त पारिश्रमिक लेकर घर पर ट्यूशन से और अधिक धन कमाने की अपेक्षा करता है क्या यही है गुरु-दक्षिणा ? शास्त्रों में 'दक्षिणा' शब्द को दो स्थान पर प्रयुक्त किया गया है **प्रथम - यज्ञ दक्षिणा और द्वितीय -गुरु दक्षिणा।** यज्ञ का ब्रह्मा, मुझे कितना धन प्राप्त होगा यह महत्त्वपूर्ण नहीं मानता था अपितु यज्ञ सफल होना अधिक महत्त्व रखता था। इसी प्रकार आचार्य अन्तेवासी शिष्य को मैं समाज तथा राष्ट्र-निर्माण हेतु समाज के निर्माता को कितना तैयार करता हूँ, ये बात महत्त्वपूर्ण थी। इस भयावह सामाजिक स्थिति को यदि फिर उसी प्राचीन रूप में देखना चाहते हैं तो इसका एकमात्र विकल्प गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति है।

माना जाता है कि गुरुकुल की शिक्षा वर्तमान परिवेश में अधिक उपयोगी नहीं हो पा रही है। आधुनिक तकनीक के क्षेत्र में गुरुकुलीय ब्रह्मचारी जो विभिन्न स्थानों पर विद्याध्ययन कर रहे हैं, उनके सामने आजीविका की समस्या खड़ी हो जाती है। लोगों की मानसिकता कुछ ऐसी बन गई है कि गुरुकुल में उन बच्चों को पढ़ाएं जो घर में अत्यधिक उद्दण्ड, आचरणहीन हों और हैरानी की बात यह है कि कई गुरुकुलों के संचालक ऐसे बच्चों को प्रवेश देने में भी परेशानी नहीं मानते। इसका परिणाम यह है कि गुरुकुल, अब गुरुकुल न होकर एक अनाथालय का रूप ले रहे हैं।

प्राचीनकाल की भांति यदि गुरुकुलों की स्थापना की जाए जहाँ समस्त विद्याओं में पारंगत होकर ब्रह्मचारी त्याग, तपस्या, वैराग्य तथा आदर्श मर्यादाओं के अनुरूप अपने जीवन को समाज कल्याण में लगायें तभी एक अच्छे और सभ्य समाज की परिकल्पना संभव है। गुरुकुल कुरुक्षेत्र इसका एक अनुपम उदाहरण है जहाँ भारतवर्ष ही नहीं अपितु देश-विदेश से ब्रह्मचारी विद्या-अर्जन करने आते हैं। गुरुकुल कुरुक्षेत्र एकमात्र ऐसा गुरुकुल है जो प्राचीन और अर्वाचीन शिक्षा का अनूठा संगम है। यहाँ समस्त विद्याओं के साथ-साथ एक आदर्श चरित्रवान युवा का निर्माण होता है।

यदि समाज के सभी गुरुकुल इसके अनुरूप हो जाएं तो न केवल शिक्षा-पद्धति में सुधार होगा बल्कि एक श्रेष्ठ राष्ट्र का निर्माण करने में हम सफल होंगे। इस क्षेत्र में केन्द्र व राज्य सरकारों का योगदान अपेक्षित है। सह-शिक्षा को पूर्णतया समाप्त कर महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्दिष्ट कम से कम तीन कोस की दूरी के अन्तर से कन्या तथा बालक वर्ग के विद्यालय स्थापित किये जाएं। कन्या विद्यालय में महिला तथा बालकों के विद्यालयों में पुरुषों की ही नियुक्ति की जाए तभी आदर्श चरित्र की कल्पना कर सकते हैं, इसका कोई दूसरा विकल्प नहीं। आज जो समाज का चारित्रिक क्षेत्र जर्जर हुआ है उसका मूल कारण कॉलेज आदि की सह-शिक्षा है। यदि इसका प्राचीन गुरुकुलीय रूपान्तरण नहीं हुआ तो दिनों-दिन चारित्रिक पतन की दिशा में कदम बढ़ेगा, इसमें कोई संशय नहीं। आज की इस घोरतम विकट परिस्थिति में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली एकमात्र चरित्र-निर्माण का विकल्प है। **''नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय''** इसका कोई दूसरा विकल्प है ही नहीं।

- आचार्य दयाशंकर जी
संस्कृत प्राध्यापक, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

हिन्दी की अंग्रेजी से संधि : एक व्यंग्य

क्या कहा 'क्ष''त्र''ज्ञ' भी बंदी बना लिए गए..आह..परन्तु ये कैसे संभव हुआ ये तीनों तो संयुक्ताक्षर होने के कारण अधिक शक्तिशाली थे। पूरा देवनागरी शिविर दूत की सूचना पे एक साथ बोल उठा, दूत ने साम्राज्ञी हिंदी को प्रणाम किया और अपना स्थान लिया।

अवश्य धूर्त आंग्ल अक्षरों ने पीछे से आक्रमण किया होगा.. और हमारी सेना की अंतिम पंक्ति के ये तीनो वर्ण युद्ध के अवसर के बिना ही दासत्व को प्राप्त हुए होंगे। महामंत्री पाणिनि ने अपना मत प्रस्तुत किया जो समस्त सभा को भी उचित प्रतीत हुआ।

हिंदी अपने सिंहासन से उठते हुए बोली - महामंत्री ! इससे पहले भी हमारे 'ट''थ''ठ''भ''ण''ड़''ढ' जैसे अत्यन्त वीर अक्षर भी युद्ध में बंदी हो चुके हैं। किस कारण हमारी पराजय हो रही है। बावन अक्षरों वाली विशाल सेना अपने से आधी, मात्र...छब्बीस अक्षरों की आंग्ल सेना के सामने घुटने टेक रही है। आह! दुःखद किंतु विष के समान ये सत्य है।

साम्राज्ञी का कथन उचित है। इसके दुष्परिणाम निकट भविष्य में स्पष्ट होंगे। आने वाली पीढ़ी तुतलायेगी। परन्तु बहुत अधिक संभावना है तब ये दोष नहीं अपितु एक गुण ही मान लिया जाय। देवी हमारी पराजय का कारण सेनापति की अदूरदर्शिता है। हमारी सेना एकमुखी होकर लड़ी और शत्रु ने हम पर चारो ओर से वार किया। देवी! हमें चतुर्मुखी सेना का निर्माण करना चाहिए था। पितामह माहेश्वर ने भी यह कहकर अपना आसन छोड़ दिया।

'क्या अब ये संभव नहीं ? अब क्या उपाय शेष है ? हिंदी ने मात्र पूछने को जैसे पूछा हो।

महामंत्री ने उत्तर दिया 'हम पूर्व की ओर ही मुँह किये खड़े रहे और हमें पता भी न चला कि हमारी पीठ के पीछे पश्चिम में सूर्य अस्त हो रहा है।' आह! दृष्टि पूर्व पर नहीं सूर्य पे रखनी चाहिए थी' कहकर उसने एक गहरी साँस छोड़ी और धीरे से कहा -संधि ही मात्र एक उपाय शेष है। सुनकर पूरी सभा में निराशा दौड़ गई।

दोष अवश्य हमीं में है मेरे पुत्र ! साम्राज्ञी हिंदी के अक्षर, अपने अभिमान में सदैव ऊपरी रेखा पर रहे। धरा पर उनके पाँव ही न पड़ते थे। परन्तु आज ऊपरी रेखा पे लटके (लिखे) इन अक्षरों को फाँसी लग रही है और अंग्रेजी के अक्षर मजबूती से अपने पाँव धरा पे जमाते जा रहे हैं (हिंदी ऊपरी रेखा पे लिखी जाती है अंग्रेजी नीचे की रेखा पे) कहकर हिंदी ने अपना मुकुट उतार दिया।

(इंटरनेट से लिया गया।)

मांग प्रार्थना में जहर और धन्यवाद प्रार्थना में अमृत बन जाता है।

चढ़ अग्निपंख उड़ गये राष्ट्रऋषि 'कलाम'

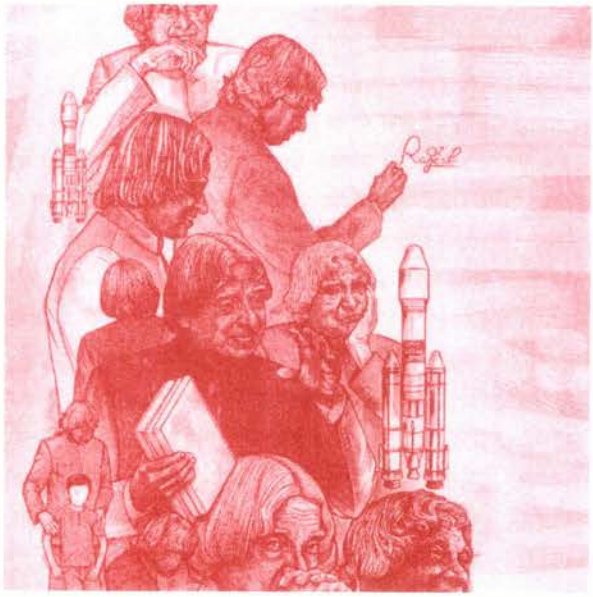

सर्व दिशा-दिशान्तर से सीमावरत कोई भूभाग देश कहलाता है। जब इस पर किसी पालन-अनुरक्षण कर्ता राजा या शासक का प्रकाश परिव्याप्त होता है, तो वही भूभाग एक राज्य के रूप में परिणत हो जाता है और इसमें जब प्रकृष्ट रूपेण संस्कारों से जन्म लेने वाली प्रजा की पदचाप होती है तभी इसे राष्ट्र का अभियान मिलता है क्योंकि निरन्तर दान करने वाले को 'रा' कहा जाता है और जहाँ ये स्थित हों वहीं राष्ट्र कहलाता है। 'राती' अर्थात दानकर्ता परोपकारी तथा 'अराती' कृपण स्वार्थी कहलाते हैं। '**अग्निमीले पुरोहितम्**' (ऋग्वेद 1.1.1) अर्थात सर्वाग्र हितकारी अग्नि की उपासना करने से ही कोई व्यक्ति मननकर्ता ऋषि बनता है। '**अग्नि: पूर्वेभिर्ऋषिरीड्यो नूतनैरुत**' (ऋग्वेद 1.1.2) अर्थात प्राचीन और अर्वाचीन सभी ऋषि अथवा चेतना सम्पन्न मानव अग्नि की उपासना करते चले आये हैं। विकास के सोपान दर-सोपान चढ़ने के लिए आध्यात्मिक एवं भौतिक दोनों की अग्नियाँ मनुष्य का मार्ग प्रशस्त करती हैं। इस सम्पूर्ण चित्रण के अन्तर्गत वर्तमान में कोई चित्र उभर कर नयनाभिराम बनता है तो वह डॉ. अब्दुल कलाम का ही विचित्र व्यक्तित्व प्रत्यक्ष होता है।

जो मनुष्य सब विद्याओं को पढ़कर औरों को पढ़ाते हैं तथा अपने उपदेश से सबका उपकार करने वाले हैं व हुए हैं, वे पूर्व शब्द से और जो कि अब पढ़ने वाले, विद्याग्रहण के लिए अभ्यास करते हैं, वे नूतन शब्द से ग्रहण किये जाते हैं और वे सब पूर्ण विद्वान शुभगुण सहित होने पर ऋषि कहलाते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रस्तुत इस परिभाषा के अन्तर्गत एक डॉ. कलाम ही क्या, डॉ. होमी जहाँगीर भाभा तथा डॉ. विक्रम साराभाई प्रभृति अनेक राष्ट्रचेता ऋषि आ जाते हैं। रामायण काल की बात ही क्या! महाभारत काल से पूर्व तक आर्यावर्त के अतिरिक्त विश्व से अन्यत्र कोई इतिहास नहीं मिलता। इन दोनों युगों में विश्वामित्र, परशुराम प्रभृति अनेक महान ऋषियों का वर्णन मिलता है, जिनसे योद्धा राजकुमार अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा ग्रहण करते थे, उनमें प्रमुख आयुध प्रक्षेपणास्त्र ही हुआ करते थे।

'**कर्मयोगी कलाम**' ग्रन्थ से प्रो. अविज्ञात की यह पंक्तियाँ उल्लेखनीय है - 'यदि भारत विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा पछाड़ा गया और इसलिए जीवन की दौड़ में पिछड़ गया तो इसका एकमेव कारण प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हमारी उपेक्षापूर्ण दृष्टि थी। यह नहीं कि प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हम अक्षम थे परन्तु हमारी दृष्टि कहीं और थी। वह सामरिक प्रौद्योगिकी, युद्धक प्रौद्योगिकी, लड़ाकू प्रौद्योगिकी पर नहीं थी। आधुनिक प्रौद्योगिकी का इतिहास हमें बताता है कि वह युद्ध-आधारित है। यह ठीक है कि प्रौद्योगिकी को नागरिक सुविधाओं तथा शान्तिपूर्ण विकास के लिए भी प्रयोग किया जाता है, परन्तु पहल युद्ध से होती है। पहले पत्थर मिसाइल की भांति आत्मरक्षा अथवा शिकार के लिए फेंके गये, चकमक पत्थर से आग की खोज बाद में हुई। पहले तीर-कमान बना, कमान की टंकार से इकतारे का संगीत बाद में सुना गया। पहले मिलिट्री इंजीनियरी बनी, सिविल इंजीनियरी बाद में आयी और फिर मैकेनिकल विद्युत इलेक्ट्रोनिकी, इसी क्रम में आयी। चाहे बाबर का तोपखाना रहा हो या अल्फ्रेड नोबल की बारूद हो या आज की परमाणु शक्ति तथा उपग्रह प्रक्षेपण-ये सभी प्रौद्योगिकियाँ युद्ध के लिए पहले विकसित हुई, व्यापार तथा विकास के लिए उनका उपयोग बाद में हुआ। यही कहानी दूरभाष तथा सूचना प्रौद्योगिकी की है। भारत शान्तिमय जीवन की अभिलाषा से ग्रस्त इन युद्ध तकनीकों के प्रति उदासीन रहा यही उसके गुलाम हो जाने तथा गुलाम ही बने रहने का कारण बना। अत: आत्म रक्षा के लिए नवीनतम प्रौद्योगिकी और शान्तिपूर्ण विकास के लिए उसे परिस्थितियों के अनुकूल ढालकर विकसित की गई नवप्रवर्तनशील प्रौद्योगिकी को ही कलाम साहब इस महालक्ष्य की प्राप्ति के लिए अपरिहार्य मानते हैं।'

प्रो. अविज्ञात लेखक के समक्ष दिन-प्रतिदिन विज्ञात रहे हैं और मेरे चिन्तन को नितप्रति परिमार्जित करते रहने के कारण मेरी प्रेरणा के संवाहक बने रहे हैं। डॉ. कलाम की उक्तानुसार क्रान्ति दृष्टि ही उन्हें राष्ट्रऋषि की महनीयता प्रदान करती है। कोई भी वैज्ञानिक या क्रान्तिद्रष्टा शोध संवाहक अपनी प्रयोगशाला की परिधि में छिपा रहता है, राष्ट्र में उसके आविष्कार के प्रचार होने पर ही उसका परिचय

हो पाता है। अपनी उपलब्धियों के अनेक राष्ट्रीय उपहार-अलंकरण प्राप्त करने के बाद भी सर्वांश में उनके विख्यात होने का श्रेय अलीगढ़ के पक्ष में जाना चाहिए क्योंकि यह प्रक्रिया यहीं के एक प्रबुद्ध नागरिक श्री लक्ष्मण प्रसाद ने सन 2000 ई. में राष्ट्र-स्तरीय नवाचार समारोह का भव्य आयोजन कर आरम्भ की थी। तब से 2014 तक अनवरत यह दिवस अलीगढ़, लखनऊ एवं विदेश में भी उनके मित्र शिक्षाविद् डॉ. जगदीश गांधी के सौजन्य से अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप धारण कर चुका है। जैसे डॉ. कलाम पद्म भूषण, पद्म विभूषण एवं भारत रत्न के अलंकरण से आलोकित होते रहे हैं, वैसे ही प्रसाद जी भी वयस्वी भूषण, वयस्वी गौरव से लेकर प्रान्तीय व राष्ट्रीय सम्मान विज्ञानरत्न आदि से विभूषित होते रहे हैं। यह स्वाभाविक भी है 'मेंहदी बाटनबारे को लगे मेंहदी को रंग'।

प्रसाद जी के प्रेरणा-प्रभाव से अलीगढ़ के अनेक शिक्षा केन्द्र संचालित हो रहे हैं। जहाँ सी. बी. गुप्ता सरस्वती विद्यापीठ की स्थापना के दूसरे वर्ष में ही डॉ. कलाम का पदार्पण होता है और ग्रामीण क्षेत्र में वे इसकी प्रगति व स्तर को देखकर प्रफुल्लित हो उठते हैं, वहीं दूसरी शिक्षण संस्था विजडम पब्लिक स्कूल प्रतिवर्ष डॉ. कलाम के जन्मदिवस 15 अक्तूबर को 'नवाचार दिवस' के रूप में वृहत भव्यता के साथ मनाता चला आ रहा है। विद्यालय प्रबंधन की जागरूकता प्रशंसनीय है। जब तक पूरे भारत को ठीक से पता भी नहीं चल पाया था कि डॉ. कलाम का हृदयाघात से निधन हो गया है, इस विद्यालय ने एएमयू सहित महानगर के शिक्षाविद्, उपकुलपतियों, वैज्ञानिकों, साहित्यकारों, समाजसेवियों की एक बड़ी सभा आयोजित कर श्रद्धांजलि प्रदान की। संस्था के अध्यक्ष श्री पी. के. गुप्ता ने अपने अश्रूपूरित नेत्रों से नया बना विशाल सभागार डॉ. कलाम के नाम समर्पित कर दिया।

सब जानते हैं कि डॉ. कलाम का जन्म तमिलनाडु के रामेश्वरम् में धनुषकोडी स्थान के परिवेश में एक निर्धन किन्तु स्वाभिमानी धर्मनिष्ठ परिवार में हुआ था। उन्हें कुरान एवं गीता दोनों ही प्रिय थे। वे तमिल, संस्कृत एवं अंग्रेजी भाषाओं में दक्ष थे। स्वाभाविक है कि उन्होंने कुरान तमिल में पढ़ी होगी और गीता को उसकी मौलिक भाषा में पढ़ते होंगे। उनके उदारमना पिता जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम को नमाज पढ़ते समय ब्रह्माण्ड का एक हिस्सा बन जाते हो जिसमें दौलत, आयु, जाति या धर्म-पन्थ का भेदभाव नहीं रहता। श्रीकृष्ण की गीता का वाचक उनके पांचजन्य घोष के साथ-साथ उनके चक्र सुदर्शन एवं बांसुरी वादन पर विमोहित हुए बिना भला कैसे रह सकता है। उन्हें प्रक्षेपणास्त्र के साथ-साथ रुद्रवीणा सदैव आकर्षित करती रही है।

उपसंहार पर आते हुए 'अग्निपंख' का स्पष्टीकरण समुचित प्रतीत होता है। डॉ. कलाम ने स्वयं ही अपनी आत्मकथा में 'विंग्स ऑफ फायर' तथा 'इग्नाइटिड माइंड' अर्थात (अग्नि की उड़ान और तेजस्वी मन) नामक ग्रन्थों के रूप में प्रकट किया है। अग्नि जो अग्रणी होती है, ज्ञान, गमन एवं प्राप्ति उसकी फलश्रुति होती है। रामेश्वरम् की गहरी सिन्धु की जलराशि की पावन पंक से उपजता है -एक अति पुनीत पंकज अर्थात कमल जो सदैव सूर्य मुखी होता है और उसे मिलते हैं ज्ञान-विज्ञान के पंख जो उसकी सूर्य की ओर उड़ान में सहायक होते हैं। जैसे सागर जल से मेघ बनते हैं और उसके गहरे तट से हजारों फीट ऊपर उड़कर मेघालय की रचना कर देते हैं, वहाँ शीतल श्वेत सुदृढ़ शिलांग के प्रौद्योगिक उच्च शिक्षण संस्थान में विद्यमान सुसज्जित छात्र एवं शिक्षकगण स्वागत ही कर पाते हैं कि धरतीमाता अपने वर्चस्वी पुत्र को अपनी गोद में समेट लेती है और वेदमाता कह उठती है -'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्यां'। इस सूर्यास्त की बेला में पंकज सूर्य का समर्थन किये बिना नहीं रह सकता है। ढाका बांग्लादेश में कभी उन्होंने छात्रों को यही सीख दी थी - 'अगर तुम सूरज की तरह चमकना चाहते हो, तो सबसे पहले तुम सूरज की तरह जलो, सपना वह नहीं जो तुम सोते हुए देखते हो, सपना वह है जो तुम्हें सोने न दें।' महाप्रयाग की बेला में प्रक्षेपणास्त्र पुरुष, राष्ट्रपति, भारत रत्न, राष्ट्रऋषि डॉ. कलाम तुम्हें प्रमाण! प्रणाम! प्रणाम!

-पं. देवनारायण भारद्वाज, अलीगढ़

प्रार्थना यही शोभा दे सकती है कि 'ईश्वर जो जो ठीक लगे करे'।

गुरुकुल है या विश्वविद्यालय : गिरिराज सिंह

कुरुक्षेत्र : ''आज देश के जो किसान आत्महत्या कर रहे हैं, रासायनिक उर्वरक भी उसका एक बड़ा कारण है। रासायनिक खाद भूमि को बंजर बना रही है। मैंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को एक प्रोजेक्ट भेजा था जिसमें उन गायों के मूत्र और गोबर का प्रयोग खेती में किये जाने की संभावनाओं पर गौर किया जाना है जो दूध नहीं देतीं।प्रधानमंत्री ने मुझे गुरुकुल कुरुक्षेत्र की गौशाला और जैविक खेती प्रोजेक्ट को देखने भेजा है।मैं तो समझ ही नहीं पा रहा हूँ कि यह गुरुकुल है या कोई कृषि विश्वविद्यालय।''

उक्त शब्द प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कहने पर गुरुकुल कुरुक्षेत्र देखने आए केन्द्रीय सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्री गिरिराज सिंह ने गुरुकुल कुरुक्षेत्र के 'जीरो बजट प्राकृतिक कृषि' फार्म एवं आधुनिक गौशाला का अवलोकन करने के उपरान्त पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहे।

उन्होंने कहा कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था के लिए एक मॉडल है। भारत देश की कृषि से जुड़ी जो वास्तविक व्यवस्था है, वह आज केवल गुरुकुल कुरुक्षेत्र में देखने को मिली है। इस अवसर पर उनके साथ हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी, गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी जी, सह-प्राचार्य शमशेर सिंह सहित कई कृषि वैज्ञानिक भी उपस्थित रहे।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र की मधुर स्मृतियाँ

*प्रिय पाठकों, गुरुकुल के पूर्व छात्र जो अब समाज के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं। गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त कर वैदिक संस्कृति और वेदों का प्रचार-प्रसार कर समाज को नई दिशा दे रहे हैं, ऐसे महानुभावों हेतु **'गुरुकुल-दर्शन'** द्वारा **'गुरुकुल कुरुक्षेत्र की मधुर स्मृतियाँ'** नाम से यह स्तम्भ आरम्भ किया गया है। इसके अन्तर्गत गुरुकुल कुरुक्षेत्र के पूर्व छात्रों के अनुभव, अध्ययन के समय की मधुर स्मृतियों को प्रकाशित किया जाएगा। आशा करते हैं कि आपको यह स्तम्भ पसंद आएगा।*

प्रो. वेदकुमार 'वेदालंकार'
डॉ. पतंगे हॉस्पीटल, पतंगे रोड
मु. पो.-उमरगा, जिला-उस्मानाबाद
महाराष्ट्र-413606

गतांक से आगे....पानी को तरसते हरिजन की पीड़ा को व्यंग्य द्वारा कवि यूं व्यक्त करते थे :-

बगुले भक्तों की कुचाल सुनाऊं सज्जनों।
कसाई के घर से दूध ले मंदिर में खीर पकाई,
लग रहा लालाजी का भोग, सुनाई सज्जनों।
वेद, गऊ, ब्राह्मण का दुश्मन कुएं पर चढ़ जावै।
गंगाराम बिना पानी के पुकारे, सज्जनों।।

धर्म के नाम पर हो रहे छुआछूत, भेदभाव को कवि ने कितने चुभते हुए शब्दों में कहा है। हरिजन के घर का पानी भी जिन्हें अपवित्र लगता है वे ही धर्मधुरन्धर उच्चवर्णीय जन कसाई के घर का दूध स्वीकार करते और मंदिर में खीर पकाते हैं। यह कैसा दोमुँहा बर्ताव है? वेद, गो और ब्राह्मण का विरोध करने वाले ईसाई, मुसलमान भी कुएँ पर चढ़कर पानी भर सकते हैं लेकिन कुएँ से दूर खड़ा हरिजन गंगाराम एक घड़ा पानी के लिए तरस रहा है ! यह कैसा धर्म? कैसी पवित्रता?

भजनी चिमटे की खनखनाहट, ढोलकी का टेका, गायक की गरजती, कड़कती आवाज और ठेठ हरियाणवी धुनों में गाये गये ये गीत हमारे बाल मन में भी सामाजिक विषमता के प्रति रोष उत्पन्न किया करते थे।

सन् 1938 में मुझे गुरुकुल में प्रविष्ट कराकर साथ आये अभिभावक वापस लौट गये। कुछ दिनों बाद घर की याद धूमिल हो गई। मेरे बालक मन ने भी जान लिया कि अब गुरु, गुरुकुल और ये साथी? यही सब तेरा जगत् है। सब अध्यापकों को पता था कि मेरे पिताजी डॉक्टर हैं, इसलिए वे मुझे **'डॉक्टर'** कहकर बुलाने लगे। परिणामत: मेरे सारे साथी भी मुझे **'डॉक्टर'** कहकर ही बुलाने लगे। दसवीं तक मैं सबके लिए डॉक्टर ही था, केवल कार्यालय की पंजिका में **'वेदकुमार'** था। पहली कक्षा के अध्यापक जानते थे कि मैं भजन या गीत गा लेता हूँ, इसलिए वे मुझे आदेश देते थे -हाँ, डॉक्टर! चल खड़ा हो जा और गा और मैं ऊंचे तख्त पर खड़ा होकर, दोनों हाथ छाती के आगे बांधकर, आंखे मींचकर गाने लगता था। अमर गायक के. एल. सहगल का एक गीत। लातूर में कभी सुना था, पता नहीं किससे, कब, किन्तु गाना याद हो गया था।

असहाय अवस्था में प्रार्थना के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं।

हमारे अंग्रेजी के अध्यापक राजमल जी कुछ दिन मुम्बई में रहे थे। उन्हें मराठी आती थी। वे मुझे मराठी गाना सुनाने का आग्रह करते थे तो मैं मराठी गाना भी गा देता था। उन दिनों मराठी का एक चित्रपट बहुत लोकप्रिय था। प्रभात कंपनी का वी. शांताराम दिग्दर्शित - संत तुकाराम। उसका एक भजन मैं गा देता था-

आंधी बीज एकले (बीज अंकुरले रोप बाढ़ ले)
एक बीजापोटी तरूकोटी कोटी। जन्म घेती सुमने फके।।

इस भजन में 'घेती' शब्द को मेरे साथी 'छेसी' या घिस्सी' समझकर हंसने लगते थे क्योंकि उस क्षेत्र में घिस्सी का एक अभद्र अर्थ था। मेरे गाना सुनाने की यह आदत आगे महाविद्यालय में भी बनी रही क्योंकि मैं हर किसी के आग्रह पर गाना सुना देता था। एक बार तो मित्रों की सभा में मैने पूरे 40 गाने सुना दिये थे। कोई कहे तो आज बुढ़ापे में भी सुना देता हूँ क्योंकि संगीत मेरे प्राणों में बसा है।

प्रत्येक ग्रीष्मावकाश में हम सभी विद्यार्थियों को किसी पर्वतीय शीतल स्थान पर टूर पर ले जाते थे क्योंकि विद्यार्थियों को उनके घर भेजना गुरुकुल के नियमों के विरुद्ध था। मैं तो प्रवेश के बाद चार साल बाद चौथी कक्षा में पास होने के बाद घर आया था। फिर एक माह लातूर में रहकर फिर से गुरुकुल चला गया, तो आठवीं पास होने पर ही घर आकर माता-पिता से मिल पाया। ब्रह्मचर्य का व्रत लेने वाले को माता-पिता के मोह में तथा माता-पिता को पुत्र के मोह में नहीं पड़ना चाहिए, इससे स्वीकृत व्रत से विचलित होने की संभावना होती है।

आजकल अभिभावक अपने बच्चों को शहर से दूर मुम्बई, नासिक आदि नगरों में पढ़ने भेजते हैं फिर भी कितना व्याकुल रहते हैं। सुबह-शाम मोबाइल पर देर तक बातें करते हैं -आज सब्जी कौन-सी थी, खाना ठीक से खाया या नहीं आदि पूछते हैं। गुरुकुल पद्धति में विद्यार्थी को विद्या और गुरु के सान्निध्य में ही छोड़ना उचित समझा गया है। **....क्रमश:**

वास्तविक जीवन की खोज

आचार्य सत्यप्रकाश जी
आचार्य, आर्ष महाविद्यालय
गुरुकुल कुरुक्षेत्र

मनुष्य का जीवन जन्म से उपलब्ध नहीं होता है। जन्म के बाद तो अवसर मिलता है कि हम जीवन का निर्माण करें। जो लोग जन्म को ही काफी समझ लेते हैं, उनका जीवन व्यर्थ हो जाता है। यह भी स्मरण दिला देना उपयोगी है कि जन्म के बाद जिस जीवन को हम वास्तविक जीवन मान लेते हैं, वह धीरे-धीरे मरते जाने के सिवाय और कुछ भी नहीं है। फिर जीवन क्या है और? जीवन कुछ और अलग बात है। स्वयं के भीतर किसी ऐसे तत्त्व के दर्शन हो जायें जिसकी मृत्यु नहीं होती है तब समझना चाहिए कि हमने जीवन को जाना, पहचाना या हम जीवित हुए। इसी बात को कठोपनिषद् में ऋषि ने निम्न शब्दों में प्रकट किया है -

इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति न चेदिहावेदीन्महती विनष्टि।
भूतेषु-भूतेषु विचिन्त्य धीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति।।

अर्थात् यदि तूने उसे यहाँ इस जन्म में जान लिया तब तो ठीक है, यदि यहाँ नहीं जाना तो विनाश ही विनाश है, महाविनाश है। ज्ञानी पुरुष संसार के एक-एक भूत, एक-एक पदार्थ जड़, चेतन पर चिन्तन करके इसी परिणाम पर पहुंचे हैं कि मूल तत्त्व वही है। ऐसे ज्ञानी लोग मृत्यु के बाद इस लोक से, इस जन्म से अमृतयुक्त हो जाते हैं।

बुद्ध के समय में लाखों लोग उनके निकट आकर सत्य की खोज के लिए भिक्षु हो गये थे। एक बूढ़ा भिक्षु एक दिन सुबह-सुबह बुद्ध के पास गया। बुद्ध ने उससे पूछा- तुम्हारी उम्र क्या है? उस भिक्षु ने कहा- केवल पाँच वर्ष। आसपास के भिक्षु भी हैरान हुए। वह तो कोई बूढ़ा था, पैंसठ साल का था। बुद्ध भी हैरान और चकित हुए। उन्होंने कहा- कुछ भूल हुई या तुम्हारे कहने में या मेरे सुनने में। कितनी उम्र है तुम्हारी? उसने फिर कहा- केवल पाँच वर्ष, क्योंकि इधर पाँच वर्षों से ही मैंने जीवन को जाना है। उससे पहले जो जीवन था, मैं समझता हूँ वह जीवन ही नहीं था। खाना-पीना, सो जाना, काम कर लेना पर्याप्त नहीं है जीवित होने के लिए। जीवन तो एक बहुत गहरी अनुभूति का नाम है। किसी अमृत, किसी ऐसे तत्त्व को जान लेना जिसकी मृत्यु न हो। तो जिसे हम समझते हैं इसे जीवन नहीं कहा जा सकता। यह तो जीवन की प्रतीक्षा है। धीमे-धीमे एक दिन मृत्यु आएगी और समाप्त कर देगी।

जो व्यक्ति ऐसे किसी सत्य की खोज में नहीं लगता है वह व्यक्ति करीब-करीब अवसर को व्यर्थ खो देता है। उसके हाथ से समय व्यर्थ ही जाता है और जो समय चला जाता है वह लौटता नहीं है। छोटी-छोटी उम्र के जो बच्चें है, बच्चियाँ हैं, यदि इनके जीवन में अभी से कोई ख्याल आ जाए खोज का, अन्वेषण का, तो शायद मृत्यु से पहले जीवन को जाना जा सकता है और यह भी स्मरण रहे कि जो उस जीवन को नहीं जान सकेगा (जिसकी मृत्यु नहीं होती है) उसे जीवन में वास्तविक आनन्द व शान्ति कभी नहीं उपलब्ध नहीं हो सकती है।

हमें अपनी प्रार्थना में सामान्य मंगल कामना करनी चाहिए।

यह जो हमारी धीमी-धीमी मृत्यु है, इस मृत्यु में कैसे शान्ति हो सकती है? यदि मैं आपको बता दूँ कि सुबह आपकी मृत्यु हो जाएगी तो फिर रात को आपको शान्ति हो सकती है? सुख हो सकता हे? आनन्द हो सकता है? फिर आपको भोजन अच्छा लगेगा? कपड़े अच्छे लगेंगे?

एक फकीर था। एक युवक निरन्तर उसके पास आता था। एक दिन आकर उस व्यक्ति ने उस फकीर से पूछा कि आपका जीवन इतना पवित्र है, आपके जीवन में इतनी सात्त्विकता है, आपके जीवन में इतनी शान्ति है लेकिन मेरे मन में यह प्रश्न उठता है कि कहीं यह सब ऊपर ही ऊपर तो नहीं है? कहीं ऐसा तो नहीं कि भीतर मन में विकार भी चलते हों, भीतर मन में वासनाएँ भी चलती हों, भीतर पाप भी चलता हो, अपवित्रता भी चलती हो। भीतर बुराइयाँ भी हों, अंधकार भी हो, अशान्ति भी हो, चिन्ता भी हो और ऊपर से आपने सब व्यवस्था कर रखी हो, ऐसा तो नहीं है।

उस फकीर ने कहा- इसका उत्तर मैं दूँ इससे पहले एक बात तुम्हें बता दूँ। कहीं उत्तर देने में भूल गया और वह बात बताई नहीं गई तो कठिनाई होगी। उस युवक ने पूछा- कौन सी बात? फकीर ने कहा- मेरी दिव्य दृष्टि ने देखा है कि तुम्हारी आयु समाप्त हो गई है। सात दिन बाद, रविवाद के दिन सूरज डूबने से पहले ही तुम मर जाओगे। अब तुम्हें क्या पूछना है, पूछो।

यदि आपमें से कोई उस युवक की जगह होता तो क्या होता? वह घबरा गया। वह युवा था अभी। मुश्किल से उसकी उम्र 30 वर्ष होगी। उसके हाथ-पैर कांपने लगे, वह तुरन्त खड़ा हो गया और जाने लगा। फकीर ने कहा- बैठो, तुमने जो पूछा था, उसका उत्तर लेते जाओ। लेकिन उस युवक ने कहा- मैं फिर आऊँगा। अभी तो मैं जाता हूँ, अभी मुझे कुछ नहीं पूछना। फकीर ने कहा- कम से कम अपना प्रश्न तो दोहरा दो। युवक ने कहा- अब प्रश्न भी भूल गया, मुझे घर जाने दो।

वह उतरा सीढ़ियों से। जब आया था तो पैरों में बल था, शान से बढ़ रहा था। अब हाथ-पैर कांप रहे हैं। वह घर भी नहीं पहुँच पाया, रास्ते में ही गिर पड़ा और बेहोश हो गया। सात दिनों तक न नींद थी, न शान्ति। मरने की खबर गाँव भर में फैल गई। उसने अपने घर के लोगों से कहा- फलां, फलां लोगों को बुला लाओ, जिनसे मेरी शत्रुता थी उनसे मैं क्षमा माँग लूं। जिनका कभी अपमान किया था, जिनको कभी गाली दी थी, उनसे क्षमा माँग लूं क्योंकि मरने से पहले उचित है कि अपने पीछे कोई शत्रु ने छोड़ जाऊं।...**क्रमशः**

गुरुकुल के प्रचारकों ने 90 गांवों में किया वेद प्रचार

17 विद्यालयों में लगाये गये आर्यवीर योग एवं जीवन निर्माण शिविर

कुरुक्षेत्र, 30 सितम्बर 2017 : गुरुकुल कुरुक्षेत्र के संरक्षक एवं हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी तथा प्रधान कुलवंत सैनी जी के ओजस्वी मार्गदर्शन में विगत 5 वर्षों से चल रहे वेद प्रचार अभियान तेजी से आगे बढ़ रहा है। सितम्बर 2017 में वेद प्रचार विभाग के योग शिक्षकों ने 17 विद्यालयों में आर्यवीर/वीरांगना योग एवं जीवन निर्माण शिविर लगाये वहीं 90 गाँवों में गुरुकुल के भजनोपदेशकों द्वारा हवन एवं भजनोपदेश व सत्संग का कार्यक्रम किया गया।

वेद प्रचार विभाग के अधिष्ठाता समरपाल आर्य ने बताया कि सितम्बर 2017 माह के अंतर्गत गुरुकुल के वेद प्रचारकों ने इंडियन पब्लिक स्कूल कतलारी, श्रीराम सीनियर सैकेण्डरी स्कूल अजराना, राजकीय माध्यमिक विद्यालय सिंहपुरा, राजकीय माध्यमिक विद्यालय चिब्बा, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय माणस, श्री रामकृष्ण सीनियर सैकेण्डरी स्कूल नलवी, माता गूजरी देवी सीनियर सैकेण्डरी स्कूल बोरीपुर, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय शरीफगढ़, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कल्याणा, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय त्यौड़ा, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय शाहाबाद, होली चाईल्ड पब्लिक स्कूल छपरा, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बेरथला, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बीड़ कालवा, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय चन्दाना, भारतीय सीनियर सैकेण्डरी स्कूल नलवी, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सम्भालखी में आर्यवीर/ आर्यवीरांगना योग एवं जीवन निर्माण शिविर लगाकर युवाओं को शारीरिक प्रशिक्षण दिया।

गुरुकुल के भजनापेदेशक महाशय जयपाल आर्य ने गांव माण्डी, पीपली माजरा, घीसरपड़ी, ईसरहेड़ी, कालवा, कानगढ़, छैला, झांसा, खेडी रामनगर, फरल, खरीण्डवा, लण्डी, दाऊमाजरा, पूण्डरी, नरकातारी, भैंसी माजरा, अमीन, मेहरा, सिरसमा, बारना, घराडसी, मुनियारपुर, हरिपुर, सांच, दादुपुर, शाहपुर, हरिगढ़, डेरा बारना, मन्धार, सलेमपुर, चकचाणपुर सहित अनेक गांवों में हवन व भजनोपदेश के कार्यक्रम किये और लोगों में फैली भ्रान्तियों को दूर करने का प्रयास किया। वेद प्रचार विभाग में लगभग 20 योग शिक्षक, प्रचारक एवं भजनोपदेशक हैं जो प्रतिदिन गांव-गांव व घर-घर जाकर लोगों को वेदों में निहित ज्ञान एवं ऋषि दयानन्द का अमर संदेश देते हैं। प्रधान कुलवंत सैनी के निर्देशानुसार कुरुक्षेत्र जिला में आर्य समाज के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक महाशय जयपाल आर्य व तृषपाल विमल अपने दल के साथ जब गांव में जाकर आर्य समाज के सिद्धान्तों और पाखण्ड का भंडाफोड़ करते हैं तो देखते ही देखते लोगों का समूह एकत्रित हो जाता है।

कैथल जिले में जसविन्द्र आर्य व महिन्द्र आर्य ने किठाना, सांकरा, रोहटी माजरा, पीडल, खनौदा, अटेला, छौत, मानस, सिरसल, देवबण, जाखौली, कैलरम, तारागढ,, सौंगरी गुलयाना, दुब्बल, ईशाक, खैरी, हरसौला, पियोदा, क्योड़क, फतेहपुर, पटेलनगर, अफगान पट्टी, पबनावा, टीक, मून्दडी, जुलानी खेड़ा, सिरटा, खानपुर, खेड़ी गुलाम अली, बलबेड़ा, कसान, कलायत, रसीणा, पाडला, खेड़ी कुलतारण, कुतुबपुर, दमरेडी, बालू, बुड्ढाखेड़ा, बाबा लदाना, फ्रांसवाला, सोंगल, कोटड़ा, खरक पाडवा, शिमला, मटौर, कवारतन, बड़सीकरी आदि गांवों में भजनोपदेश के माध्यम से समाज में फैली बुराइयों को दूर करने का प्रयास किया। हर किसी के होठों पर गुरुकुल कुरुक्षेत्र के इस पुनीत कार्य की प्रशंसा होती है। क्षेत्र के लोगों का भरपूर सहयोग वेद प्रचार विभाग के प्रचारकों को प्राप्त होता है।

'आर्यवीर दल के व्यायाम शिक्षक एवं वेद प्रचार अधिष्ठाता समरपाल आर्य के दिशा निर्देशन में योग शिक्षक चन्द्रपाल आर्य, सोनू अर्य, सचिन आर्य, जितेन्द्र आर्य, जयराम आर्य, प्रवीण आर्य, भीष्म आर्य, आर्यमित्र आर्य, सोहनवीर, विशाल आर्य, कनिष्क गांव-गांव के विद्यालयों में जाकर 7 दिवसीय आर्य वीर योग एवं जीवन निर्माण शिविर लगाते हैं। इन शिविरों में युवक व युवतियों को जहाँ आत्मरक्षा के गुर सिखाए जाते हैं वहीं, पी.टी. डम्बल, लेजियम, जूड़ो-कराटे आदि का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। इतना ही नहीं ऊँचे-ऊँचे मानव स्तूपों का निर्माण, मानव पुल का निर्माण, सुदर्शन चक्र, अचम्भित करने वाले स्तूप भी इन शिविरों में युवाओं को सिखाए जाते है।

इन शिविरों में समाज में फैली कन्या भ्रूण हत्या, नशा, अज्ञानता, पाखण्ड, गुरुडम जैसी बुराईयों को समाप्त करने के लिए युवाओं को प्रेरित किया जाता है। वहीं उन्हें आपसी भाईचारा दृढ़ करने, राष्ट्र प्रेम का उत्साह जगाने, वेदों में निहित ज्ञान और वैदिक सभ्यता व संस्कृति को पुनः अपनाने का आह्वान किया जाता है। इन शिविरों से ही गुरुकुल कुरुक्षेत्र से अनेक आर्य वीरांगनाएं और अनेक आर्यवीर शाखा नायक तैयार हो चुके हैं जो गांव-गांव में प्रातः व सायं अन्य युवा एवं युवतियों को अपने साथ जोड़कर वैदिक ज्ञान का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं।

क्रांतिकारी भजनोपदेशक महाशय जयपाल आर्य के साथ स्वयं समरपाल आर्य, जगदीश आर्य, तृषपाल विमल, सुभाष आर्य, जसविन्द्र आर्य व महिन्द्र आर्य गांव-गांव में जाकर हवन, यज्ञ व भजनोपदेश के माध्यम से समाज में फैले अज्ञानता के अंधकार को दूर कर रहे हैं साथ ही लोगों को एक बार फिर से वेदों के रास्ते पर लौटने के लिए प्रेरित कर रहे हैं वहीं, युवाओं में भारतीय सभ्यता और संस्कृति का प्रचार-प्रसार कर उन्हें सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

सज्जनों की मैत्री का जन्म आपस की बातचीत से ही हो जाता है।

जीरो बजट प्राकृतिक कृषि से समृद्ध होगा किसान : आचार्य देवव्रत

कुरुक्षेत्र, 16 सितम्बर 2017 : हिमाचल के राज्यपाल व गुरुकुल के संरक्षक आचार्य देवव्रत ने कहा कि जीरो बजट प्राकृतिक कृषि अपनाने से ही किसान आर्थिक रूप से समृद्ध व स्वस्थ होगा। प्राकृतिक कृषि से पर्यावरण स्वच्छ रहेगा तथा जल संरक्षण के क्षेत्र में भी व्यापक सुधार होगा। वे गुरुकुल कुरुक्षेत्र परिसर में प्रेसवार्ता के दौरान पत्रकारों से वार्ता कर रहे थे। उन्होंने कहा कि रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से फसलों में अनेक बीमारियां पैदा हो रही हैं जिन पर अंकुश लगाने के लिए किसान महंगे कीटनाशकों का प्रयोग कर रहे हैं जबकि प्राकृतिक कृषि से खेती में कोई बीमारी पैदा नहीं होती। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उन्हें एक लक्ष्य दिया है कि किसान को अधिक उत्पादन प्रदान कर समृद्ध बनाया जा सके ताकि देश के किसान खुशहाल व आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हों।

आचार्य देवव्रत ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुरुकुल की प्राकृतिक कृषि का अवलोकन करने के लिए अनेक कृषि वैज्ञानिकों को भेजा ताकि वे गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा की जा रही प्राकृतिक कृषि का अवलोकन कर सभी देशवासियों को अवगत करा सकें। आचार्य ने बताया कि प्राकृतिक कृषि के प्रचार व प्रसार हेतु हिमाचल के कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों को जोड़ा गया है ताकि वे देश के किसानों का ध्यान प्राकृतिक कृषि की ओर आकृष्ट कर सकें। उन्होंने बताया कि रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से भूमि की उर्वरा शक्ति दिन-प्रतिदन घटती जा रही है जिसके कारण किसान अधिक उत्पादन के लोभ में अधिक उर्वरकों का प्रयोग कर कर्ज के बोझ तले दबते जा रहे हैं। आचार्य देवव्रत ने बताया कि देशी गाय के एक ग्राम गोबर में 300 से 500 करोड़ तक सूक्ष्म जीवाणु होते हैं, जबकि विदेशी गाय के एक ग्राम गोबर में केवल 78 लाख सूक्ष्म जीवाणु पाये जाते हैं। देशी गाय के गोबर एवं मूत्र की महक से देशी केंचुए भूमि की ऊपरी सतह पर आ जाते हैं तथा वे भूमि की उपजाऊ शक्ति को बढ़ाने में किसान के मित्र साबित होते हैं। उन्होंने पत्रकारों को गुरुकुल कुरुक्षेत्र के खेतों में की जा रही प्राकृतिक कृषि द्वारा तैयार धान की फसल दिखाई जिसे देखकर पत्रकार गदगद हो गए। आचार्य ने बताया कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र प्राकृतिक कृषि के उत्थान के लिए पूरे देश के किसानों को जागरूक व सजग करेगा। आचार्य ने बताया कि प्राकृतिक कृषि से फसलों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है जिससे किसानों को अधिक उत्पादन मिलता है। देशी गाय दूध न देने के बावजूद भी अधिक उपयोगी पायी गई है क्योंकि उसके गोबर व गोमूत्र में भूमि की उर्वरा-शक्ति बढ़ाने की अधिक क्षमता है।

पत्रकारवार्ता में कृषि एवं बागवानी विश्वविद्यालय, नौनी हिमाचल प्रदेश के कुलपति एच. सी. शर्मा तथा हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर, शिमला के कुलपति प्रो. अशोक कुमार सरयाल, गुरुकुल प्रबंध समिति के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी, हिमाचल प्रदेश सर्विस कमीशन के अध्यक्ष जनरल धर्मबीर राणा, सह-प्राचार्य शमशेर सिंह, कृषि वैज्ञानिक हरिओम, डॉ. वजीर सिंह, प्रेस सचिव जयन्त शर्मा, डॉ. श्यामलाल शर्मा सहित अनेक कृषि अधिकारी उपस्थित थे।

बच्चों के अद्भुत प्रदर्शन को देख हैरान हुए अभिभावक

गुरुकुल के सह-प्राचार्य शमशेर सिंह ने वेद प्रचार, प्राकृतिक कृषि सहित सभी प्रकल्पों की जानकारी दी

कुरुक्षेत्र, 11 सितम्बर 2017: गुरुकुल कुरुक्षेत्र के संरक्षक एवं हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत व गुरुकुल के प्रधान कुलवंत सैनी के ओजस्वी मार्गदर्शन में चल रहे वेद प्रचार अभियान के तहत मानस गांव के महर्षि दयानन्द सरस्वती पब्लिक स्कूल में सात दिवसीय आर्यवीर दल योग एवं जीवन निर्माण शिविर का आयोजन किया गया जिसमें गुरुकुल के योग प्रशिक्षक भीष्म आर्य द्वारा विद्यार्थियों को प्रशिक्षित किया गया। शिविर का आज भव्य समापन हुआ जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के सह-प्राचार्य शमशेर सिंह पहुंचे। विद्यार्थियों द्वारा शिविर में सीखे गये सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार, डम्बल, लेजियम, स्तूप निर्माण, योगासन आदि का हैरतअंगेज प्रदर्शन किया गया जिसे देख कार्यक्रम में उपस्थित बच्चों के परिजनों की तालियों की गड़गड़ाहट से पूरा विद्यालय परिसर गूंज उठा।

गुरुकुल के सह-प्राचार्य शमशेर सिंह ने कार्यक्रम में उपस्थित अभिभावकों व छात्रों को गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा चलाई जा रही विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि गुरुकुल की आधुनिक गोशाला में गो-संवर्धन व नस्ल सुधार का कार्य किया जा रहा है, वहीं 180 एकड़ के प्राकृतिक कृषि फार्म के माध्यम से गुरुकुल प्राकृतिक कृषि को बढ़ावा दे रहा है। इसके अतिरिक्त प्राकृतिक चिकित्सालय, नर्सरी, केंचुआ खाद निर्माण केन्द्र, आर्ष महाविद्यालय, आर्य भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र आदि की भी शमशेर सिंह ने विस्तृत जानकारी दी और गुरुकुल में आने का निमंत्रण भी दिया।

स्कूल के प्रिंसीपल दीपक आर्य ने अपने सम्बोधन में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के संरक्षक आचार्य देवव्रत व प्रधान कुलवंत सैनी द्वारा समाज सुधार के क्षेत्र में किये जा रहे नशामुक्ति अभियान, पाखण्ड खण्डन, प्राकृतिक कृषि तथा आपसी भाईचारे को बढ़ावा देना आदि की मुक्त कंठ से सराहना की तथा बच्चों को आर्य समाज के सिद्धान्तों और वैदिक सभ्यता व संस्कृति का अनुसरण करने का आह्वान किया। अंत में शमशेर सिंह ने विद्यालय के प्रिंसीपल दीपक शर्मा को महर्षि दयानन्द सरस्वती का स्मृति-चिह्न भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर गांव के सरपंच, नम्बरदार, महाशय जयपाल आर्य, जसविन्द्र आर्य, महिन्द्र आर्य, सतबीर आर्य, सोमनाथ सहित भारी संख्या में आसपास के गांवो से आए लोग उपस्थित थे।

गुरुकुल बना जिला स्तरीय प्रतियोगिता का चैम्पियन

228 स्वर्ण पदक, 23 रजत पदक तथा 14 कांस्य पदक जीतकर बनाया नया कीर्तिमान

कुरुक्षेत्र, 2 सितम्बर 2017 : गुरुकुल कुरुक्षेत्र के ब्रह्मचारियों ने अपनी बेहतरीन खेल प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए जिला स्तरीय विद्यालय खेलकूद प्रतियोगिता में 228 स्वर्ण पदक जीतकर गुरुकुल को चैम्पियन बनाया। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने 23 रजत तथा 11 कांस्य पदक भी जीते। यह जानकारी देते हुए गुरुकुल के **सह-प्राचार्य शमशेर सिंह** ने बताया कि हरियाणा शिक्षा विभाग द्वारा 29 से 31 अगस्त तक इस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें गुरुकुल कुरुक्षेत्र के नेतृत्व में थानेसर ब्लॉक की टीमों ने भाग लिया और 15 टीमों ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। गुरुकुल के संरक्षक एवं हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने भी इस उपलब्धि पर सभी खिलाड़ियों, उनके प्रशिक्षकों व समस्त गुरुकुल परिवार को शुभकामनाएँ दी।

उन्होंने बताया कि डीपीई देवीदयाल व राजेन्द्र आर्य के नेतृत्व में प्रतियोगिता में भाग लेने वाली फुटबाल की अंडर-14 टीम ने पेहवा की टीम को 12-0 से तथा अंडर-17 की टीम ने 7-0 से करारी मात दी। वहीं अंडर-19 की टीम ने शाहाबाद की टीम को 7-0 से हराया, इस मैच में ब्रह्मचारी शुभम आर्य ने 3 गोल दागे। इसी प्रकार बास्केटबाल में अंडर-17 की टीम ने शाहाबाद को पराजित किया, थ्रोबॉल में गुरुकुल अंडर- 14 की टीम ने पेहवा को, अंडर-17 की टीम ने डीएवी स्कूल पेहवा को पराजित किया। इसी प्रकार हैंडबॉल, नेटबॉल तथा खो-खो में अंडर-14, 17 तथा 19 तीनों आयुवर्गों में गुरुकुल की टीम सर्वश्रेष्ठ रही।

उन्होंने बताया कि एथलेटिक्स में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने 11 स्वर्ण, 9 रजत तथा 3 कांस्य पदक प्राप्त किये। इसी प्रकार शूटिंग में 3 स्वर्ण, 5 रजत तथा 3 कांस्य पदक जीते। जिम्नास्टिक में 9 स्वर्ण, 2 रजत, बॉक्सिंग में 11 स्वर्ण, 7 रजत तथा 6 कांस्य पदक प्राप्त किये। स्वीमिंग में 3 स्वर्ण, 2 कांस्य तथा योग में 9 स्वर्ण पदक प्राप्त कर कीर्तिमान स्थापित किया है।

गुरुकुल के **प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी, प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता, सह-प्राचार्य शमशेर सिंह** ने सभी खिलाड़ियों के साथ-साथ डीपीई देवीदयाल, राजेन्द्र सहित शूटिंग कोच बलबीर सिंह, फुटबाल कोच भूपेन्द्र, जतिन आर्य, योग कोच दिनेश, बॉक्सिंग कोच विजय गागट, रिन्कू आर्य, बॉस्केटबाल कोच राजेश आर्य, सहित कोच जगमेश, अनिल, अंकुर को बधाई और शुभकामनाएं दी।

सुरखपुर में सात दिवसीय शिविर के समापन पर पहुंचे बीईओ गागट

कुरुक्षेत्र, 6 सितम्बर 2017: गुरुकुल कुरुक्षेत्र के संरक्षक एवं हिमाचल के राज्यपाल आचार्य देवव्रत व गुरुकुल के प्रधान कुलवंत सैनी के ओजस्वी मार्गदर्शन में चल रहे वेद प्रचार अभियान के तहत राजकीय उच्च विद्यालय, सुरखपुर में सात दिवसीय आर्यवीर दल योग एवं जीवन निर्माण शिविर का आयोजन किया गया जिसमें गुरुकुल के योग प्रशिक्षक सचिन आर्य एवं जितेन्द्र आर्य द्वारा विद्यार्थियों को प्रशिक्षित किया गया। शिविर का भव्य समापन हुआ जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में शाहाबाद के खण्ड शिक्षा अधिकारी रामदिया गागट जी पहुंचे, वहीं गुरुकुल के वेद प्रचार विभाग के अधिष्ठाता समरपाल आर्य, भजनोपदेशक तृषपाल विमल व सुभाष आर्य मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

विद्यार्थियों द्वारा सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार, डम्बल, लेजियम, स्तूप निर्माण, योगासन आदि का हैरतअंगेज प्रदर्शन किया गया जिसे देख कार्यक्रम में उपस्थित बच्चों के परिजनों के तालियों की गड़गड़ाहट से पूरा विद्यालय परिसर गूंजा दिया। बीईओ गागट ने गुरुकुल कुरुक्षेत्र के संरक्षक आचार्य देवव्रत व प्रधान कुलवंत सैनी द्वारा समाज सुधार के क्षेत्र में किये जा रहे नशामुक्ति अभियान, पाखण्ड खण्डन, जीरो बजट प्राकृतिक कृषि तथा आपसी भाईचारे को बढ़ावा देना आदि की मुक्त कंठ से सराहना की तथा बच्चों को आर्य समाज के सिद्धान्तों और वैदिक सभ्यता व संस्कृति का अनुसरण करने का आह्वान किया। अंत में विद्यालय के प्रिंसीपल इन्द्रजीत सिंह ने बीईओ रामदिया गागट व गुरुकुल के प्रचारकों का आभार व्यक्त किया।

गुरुकुल के निशानेबाजों ने 11 पदक जीते

कुरुक्षेत्र 2 सितम्बर 2017: गुरुकुल कुरुक्षेत्र के निशानेबाजों ने अपनी बेहतरीन खेल प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए जिला स्तरीय विद्यालय खेलकूद प्रतियोगिता में 3 स्वर्ण पदकों सहित 11 पदक जीतकर गुरुकुल की ख्याति में और वृद्धि की है। यह जानकारी देते हुए गुरुकुल के सह-प्राचार्य शमशेर सिंह ने बताया कि हरियाणा शिक्षा विभाग द्वारा 28 से 30 अगस्त तक गुरुकुल की शूटिंग रेंज में यह प्रतियोगिता हुई जिसमें कुरुक्षेत्र जिला के लगभग 10 विद्यालयों के 86 निशानेबाजों ने भाग लिया।

शूटिंग कोच बलबीर सिंह ने बताया कि गुरुकुल के नवलजीत आर्य, दीपेन्द्र आर्य, देवाशीष आर्य ने स्वर्ण पदक, वेद आर्य, प्रिंस आर्य, आशीष आर्य, हर्ष आर्य, तथा देव आर्य ने रजत पदक तथा मुकुल आर्य, गौरव आर्य व चिराग आर्य ने कांस्य पदक जीतकर गुरुकुल व अपने माता-पिता का नाम रोशन किया है।

गुरुकुल के संरक्षक एवं हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत, प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी, प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता एवं सह-प्राचार्य शमशेर सिंह ने सभी निशानेबाजों सहित कोच बलबीर सिंह को इस उपलब्धि पर शुभकामनाएँ दीं और भविष्य में इससे भी अच्छा प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र : संक्षिप्त परिचय

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में शैक्षणिक स्तर पर दो प्रकल्प चलते हैं। सी.बी.एस.ई. पाठ्यक्रम के अनुसार 10+2 तक का विद्यालय है जो ISO 9001: 2008 प्रमाणित संस्थान है। इस पाठ्यक्रम के अनुसार यहाँ लगभग 1500 विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। दूसरा **आर्ष महाविद्यालय** है जिसमें वैदिक व्याकरण व वैदिक साहित्य का अध्ययन कराया जाता है। इन शिक्षण प्रकल्पों के अतिरिक्त शिक्षा, समाज सेवा व सामाजिक चेतना को ध्यान में रखते हुए जो विविध गतिविधियाँ चलाई जा रही हैं, इनकी संक्षिप्त झलक निम्न प्रकार है -

प्रशासनिक विभाग : आधुनिक तीन मंजिला प्रशासनिक भवन में अतिथियों के लिए 250 कुर्सियाँ एवं सुविधायुक्त वातानुकूलित सभागार व कार्यालय हैं।

आर्ष महाविद्यालय : वैदिक धर्म एवं वेदों के प्रचार हेतु आर्ष पाठ विधि से व्याकरण एवं वेद के विद्वान् तैयार किये जा रहे हैं।

वातानुकूलित संगणक प्रयोगशालाएँ : गुरुकुल में वातानुकूलित कम्प्यूटरीकृत शिक्षा-व्यवस्था है। यहाँ 75 कम्प्यूटर हैं जिन पर छोटे-बड़े छात्रों हेतु अलग-अलग व्यवस्था है। इनमें प्रोजेक्टर और वाई-फाई की सुविधा भी है।

वातानुकूलित भाषा व विज्ञान प्रयोगशालाएँ : शिक्षा को व्यावहारिक रूप देने व छात्रों के पूर्ण विकास हेतु बहुतकनीकी यन्त्रों से युक्त व दृश्य-श्रव्य यंत्रों से सुसज्जित प्रयोगशालाएँ हैं।

वातानुकूलित पुस्तकालय व वाचनालय : छात्रों के विकास हेतु वेद, उपनिषद्, वेदांग एवं स्वतन्त्रता सेनानियों का इतिहास व महापुरुषों की जीवनियाँ तथा विज्ञान, दर्शन सम्बन्धी हजारों पुस्तकें व सी.डी. आदि हैं। 21 दैनिक समाचार पत्र एवं 75 साप्ताहिक व मासिक पत्रिकाएँ आती हैं।

अत्याधुनिक गोशाला : छात्रों को शुद्ध एवं पौष्टिक दुग्ध उपलब्ध कराने के लिए गुरुकुल में अत्याधुनिक गोशाला है। जहां पर विभिन्न देशी व विदेशी नस्ल की लगभग 282 गायें हैं जो प्रतिदिन 1150 लीटर दूध देती हैं।

अश्वारोहण (घुड़सवारी) : इसके लिए उत्तम नस्ल के 8 घोड़ियाँ व 1 घोड़ा है। कुशल प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है।

क्लीनिकल लेबोरेट्री : पशुओं की विभिन्न बीमारियों से संबंधित टेस्ट हेतु लैब है जहां पर अनुभवी डॉक्टर द्वारा पेशाब, खून व दूध आदि की प्रामाणिक जाँच की जाती है।

शूटिंग (निशानेबाजी प्रशिक्षण) : इसके माध्यम से गुरुकुल ने अभी तक 10 अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी राष्ट्र को दिये हैं।

एन.सी.सी (छोटे-बड़े छात्रों हेतु) : गुरुकुल एन.सी.सी. के छात्र गणतन्त्र व स्वतंत्रता दिवस की परेड में भाग ले चुके हैं तथा एन.सी.सी. के कैम्पों में प्रथम स्थान प्राप्त कर चुके हैं।

नेशनल डिफेंस एकेडमी (एन.डी.ए.) : सेवानिवृत्त सेना अधिकारी के मार्गदर्शन में एन.डी.ए. परीक्षा की तैयारी के लिए दो एकड़ भूमि पर ऑब्स्टेकल कोर्स का निर्माण किया गया है।

एन.एस.एस विंग : राष्ट्रीय एकता व सामाजिक सद्भाव हेतु एन.एस.एस. द्वारा सामाजिक चेतना जागृत की जाती है।

विशाल भोजनालय : छात्रों, गुरुकुल से जुड़े सभी कर्मचारियों एवं अतिथियों हेतु विशाल भोजनालय की व्यवस्था है।

संगीतमय फव्वारे : गर्मियों की उमस से बचने एवं मनोरंजनपूर्ण स्नान के लिए आकर्षक संगीतमय फव्वारें गुरुकुल में है।

पं. अमीचन्द संगीत केन्द्र : छात्रों को मनोरंजन एवं संगीत शिक्षण हेतु भक्त अमीचन्द संगीत केन्द्र में संगीत की शिक्षा-व्यवस्था है।

योग एवं प्राकृतिक चिकित्सालय : गुरुकुल में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सालय है जो गम्भीर रोगों के उपचार के साथ चिकित्सा सम्बन्धी 'डिप्लोमा इन योग एंड साइंस' कोर्स भी कराता है।

धन्वन्तरि चिकित्सालय : छात्रों के शारीरिक स्वास्थ्य एवं खेलकूद में आने वाली हल्की चोट-मोच आदि के लिए आयुर्वेदिक चिकित्सालय में कुशल वैद्यों की व्यवस्था है।

वेद प्रचार विभाग : भारतीय संस्कृति एवं वेदों के प्रचार हेतु गुरुकुल में वेद प्रचार विभाग का गठन किया गया। जिसके तहत लगभग डेढ़ दर्जन प्रचारक दिन-रात विभिन्न क्षेत्रों में घूम-घूम कर लोगों को वेदवाणी और आर्य सिद्धान्तों के प्रति जागरूक कर रहे हैं। वहीं योग शिक्षकों के माध्यम से विद्यालय व कॉलेजों में योग एवं चरित्र निर्माण अभियान चलाया जा रहा है।

इनके अतिरिक्त **जैविक खाद एवं कृषि फार्म, स्वामी श्रद्धानन्द आयुर्वेदिक फार्मेसी, आकर्षक पौधशाला (नर्सरी)** भी है। नवनिर्मित आर्य भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र है जिसमें आर्य भजनोपदेशक तैयार किये जाते हैं। वहीं '**गुरुकुल-दर्शन**' मासिक पत्र के माध्यम से वैदिक धर्म एवं संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है।

परिश्रम हर अच्छी वस्तु की भाँति स्वयं ही अपना पुरस्कार है।

वेद प्रचार की झलकियाँ

श्रीराम पब्लिक स्कूल, अजराना कलां के प्राचार्य को सम्मानित करते हुए गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सैनी जी व अन्य वेद प्रचारक

महर्षि दयानन्द सी. सै. स्कूल मानस के प्राचार्य व स्टाफ को सम्मानित करते हुए गुरुकुल के सह-प्राचार्य शमशेर सिंह व अन्य वेद प्रचारक

राजकीय उच्च विद्यालय हरसौला (कैथल) में भजनोपदेश कार्यक्रम में विद्यार्थियों को पुरस्कृत करते हुए वेद प्रचार विभाग के जसविन्द्र आर्य व महिन्द्र आर्य

गांव बारना के एक परिवार में हवन, भजनोपदेश कार्यक्रम करते हुए गुरुकुल के भजनोपदेशक महाशय जयपाल आर्य व जगदीश आर्य

राजकीय माध्यमिक विद्यालय, नंगला की प्राचार्या को महर्षि दयानन्द का स्मृति चिह्न देकर सम्मानित करते हुए गुरुकुल वेद प्रचार विभाग के प्रचारक

राजकीय उच्च विद्यालय, त्यौड़ा की प्राचार्या को स्मृति -चिह्न देकर सम्मानित करते हुए गुरुकुल वेद प्रचार विभाग के प्रचारक

श्रीरामकृष्ण सी. सै. स्कूल, नलवीकी प्राचार्या को महर्षि दयानन्द का स्मृति चिह्न देकर सम्मानित करते हुए गुरुकुल वेद प्रचार विभाग के प्रचारक

गर्वनमेंट सी. सै. स्कूल, शाहाबाद की प्राचार्या को महर्षि दयानन्द का स्मृति चिह्न देकर सम्मानित करते हुए गुरुकुल वेद प्रचार विभाग के प्रचारक

।। ओ३म् ।।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के
105वें वार्षिक महोत्सव
पर आप सभी इष्ट-मित्रों एवं परिवार सहित सादर आमंत्रित हैं।

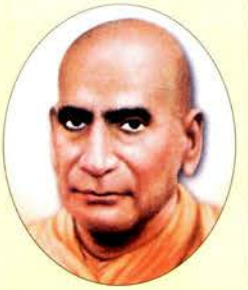

स्वामी श्रद्धानन्द जी

कार्यक्रम एवं आमंत्रित अतिथिगण

शुक्रवार, 13 अक्तूबर 2017

7:00 प्रात: सामवेद पारायण महायज्ञ

ब्रह्मा : माननीय आचार्य श्री सत्य प्रकाश जी
आर्ष महाविद्यालय, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

10:00 प्रात : ध्वजारोहण

मुख्य अतिथि : माननीय अभिषेक गर्ग जी
पुलिस अधीक्षक, कुरुक्षेत्र

शनिवार, 14 अक्तूबर 2017

07:00 प्रात: सामवेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहूति

09:00 प्रात: जीरो बजट प्राकृतिक कृषि एवं गो-रक्षा सम्मेलन

मुख्य अतिथि: माननीय मा. श्री रामपाल आर्य जी
प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा

अध्यक्ष : माननीय श्री उम्मेद सिंह जी
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा

विशिष्ट अतिथि : माननीय श्री सर्वमित्र जी
प्रस्तोता, आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा

02:00 दोपहर : ब्रह्मचारियों द्वारा शारीरिक व्यायाम प्रदर्शन

08:00 रात्रि : वेद प्रवचन एवं संगीत

अध्यक्ष : माननीय आचार्य देवव्रत जी
महामहिम राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश

विशिष्ट अतिथि : माननीय श्री ओमप्रकाश धनखड़ जी
कृषि, पशुपालन, डेयरी मंत्री, हरियाणा सरकार

निवेदक

कुलवन्त सिंह सैनी	विश्वबन्धु आर्य	कर्नल अरुण दत्ता	शमशेर सिंह
प्रधान, गुरुकुल कुरुक्षेत्र	अधिष्ठाता	प्राचार्य	सह-प्राचार्य

नोट : गुरुकुल के छात्रों का दीपावली अवकाश 15 अक्तूबर प्रात: 9:30 बजे से 29 अक्तूबर 2017 तक रहेगा।

RNI Reg.No. : HARBIL / 2015 / 64244
Postel Regn. No. HR/KKR/181/2015-2017

स्वामी- गुरुकुल कुरुक्षेत्र, कुरुक्षेत्र के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक श्री कुलवंत सिंह सैनी द्वारा क्रेजी ऑफसेट प्रिंटिंग प्रैस, सलारपुर रोड, निकट डी.एन. कालेज, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) से मुद्रित एवं गुरुकुल कुरुक्षेत्र, (निकट थर्ड गेट कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी), कुरुक्षेत्र से प्रकाशित। सम्पादक -कुलवंत सिंह सैनी

मूल्य-15रु एक प्रति (150रु वार्षिक)